साहित्य

अचरज ग्रह की दन्तकथा

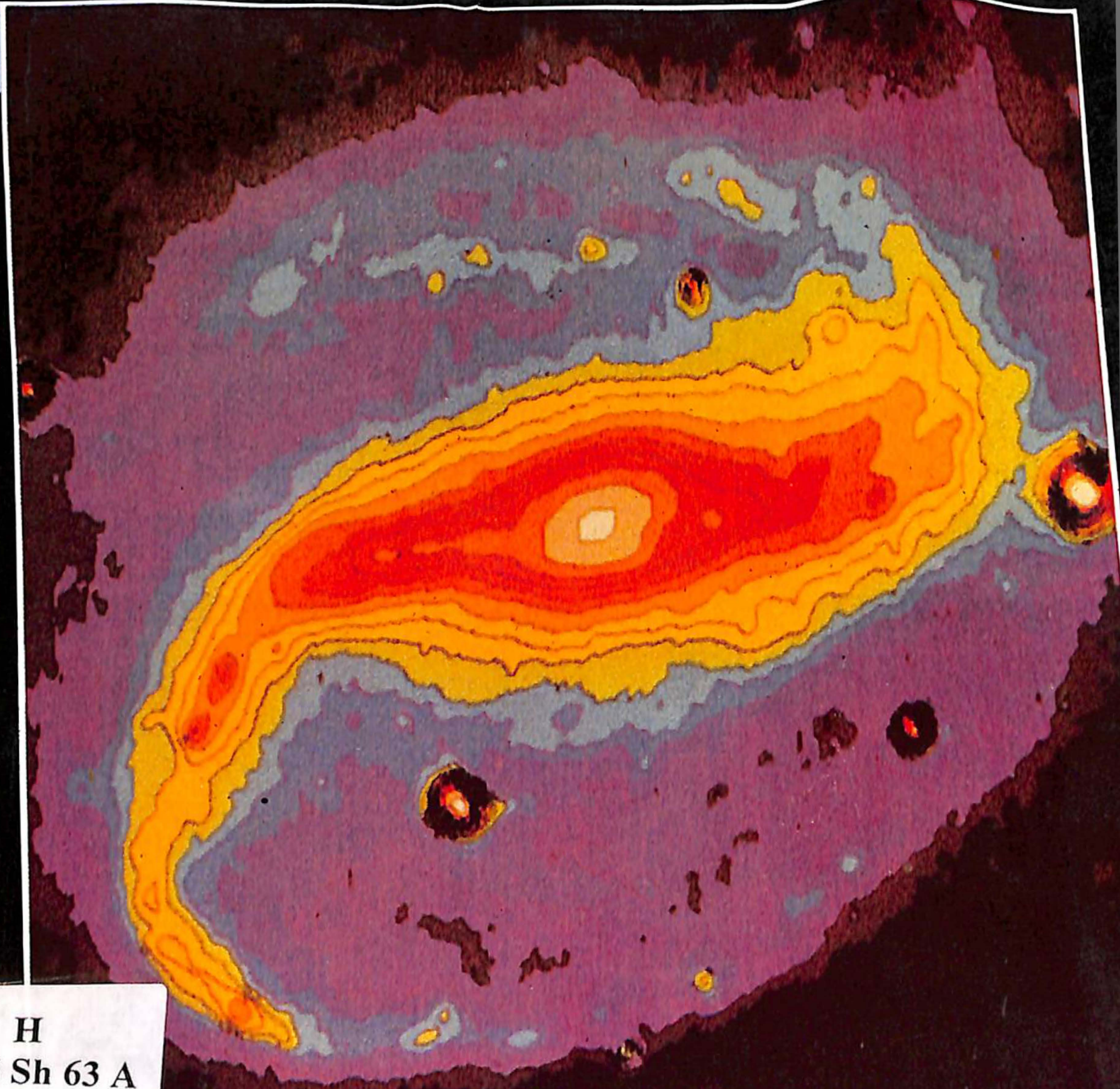

H
028.5 Sh 63 A

028·5
Sh63A

ताजिमा शिंजी

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

अचरज ग्रह की दन्तकथा

ताजिमा शिंजी

हिन्दी अनुवाद

हरीश नारंग

चित्रांकन

गीता वडेरा

साहित्य

साहित्य अकादेमी

Acharaja Graha Ki Dantakatha : Hindi translation by Harish Narang of Jaima Shin i's short-stories collection *The Legend of Planet Surprise*, in English, Sahitya Akademi, New Delhi (1999), Rs. 40.

© साहित्य अकादेमी

प्रथम संस्करण : 1993
पुनर्मुद्रण : 1997
पुनर्मुद्रण : 1998, 1999
पुनर्मुद्रण : 1999

साहित्य अकादेमी

मुख्य कार्यालय

रवीन्द्र भवन, 35, फीरोज़शाह रोड़, नयी दिल्ली 110 001

विक्रय केन्द्र

स्वाति, मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय

जीवन तारा बिल्डिंग, चौथी मंजिल,
23 ए/44 एक्स, डायमंड हार्बर मार्ग,
कलकत्ता 700053

गुना बिल्डिंग, दूसरी मंजिल,
304-305, अन्ना सलाई, तेनामपेट,
चेन्नई 600018

172, मुम्बई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग,
दादर, मुम्बई 400014

ए डी ए रंगमन्दिर,
109, जे० सी० मार्ग,
बैंगलोर 560002

H
028.5
Sh63 A

ISBN 81-260-0224-7

मूल्य : चालीस रुपये

मुद्रक : अजित प्रिन्टर्स, दिल्ली

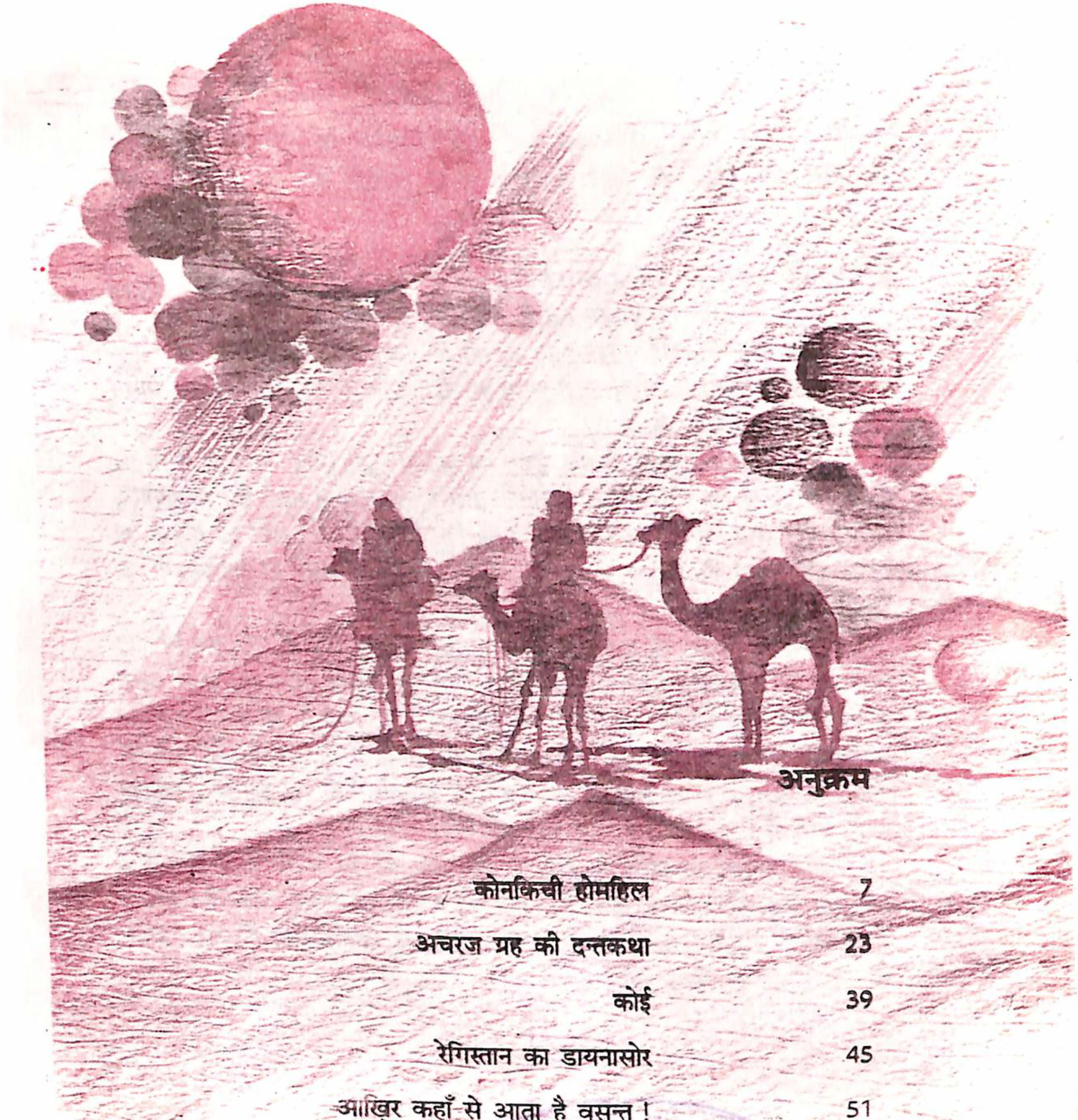

अनुक्रम

कोनकिची होमहिल	7
अचरज ग्रह की दन्तकथा	23
कोई	39
रेगिस्तान का डायनासोर	45
आख़िर कहाँ से आता है वसन्त !	51

लेखक की ओर से

हम किस प्रकार के युग में जी रहे हैं?

जहाँ तक भविष्य का सम्बन्ध है, कोई आशा है या नहीं?

क्या मानवता कोई आशा जगा सकती है—या यह सम्भव नहीं है?

नयी शताब्दी में प्रवेश करते समय हमारी प्रजाति के युवा एवं बूढ़ों के सामने यही सबसे महत्त्वपूर्ण मुद्दा है।

और फिर इन प्रश्नों के हल ढूँढ़ने का जटिल कार्य हमारे आज के बच्चों पर है जो भविष्य में बढ़ने का प्रयत्न करनेवाले सबसे संवेदनशील प्राणी हैं। ग्रहणशील, संवेदनशील तथा कार्यशक्ति से भरपूर वे हर दिन देखते हैं और बड़ों की दुनिया का दामन थामे रहते हैं और अपने दिमाग़ में समकालीन सभ्यता की कठिनाइयों को सँजोये रहते हैं।

हम तो काग़ज़ की एक नाव में क़ैद मुसाफ़िरों की तरह हैं, जो एक विशाल प्रपात के नीचे असहाय इधर-से-उधर थपेड़े खाते घूम रही है। हम बड़े-बुज़ुर्ग किस प्रकार अपने बच्चों को उस महाविपत्ति का अहसास करा सकते हैं, जो उनकी हक़ीक़त बननेवाली है। अगर हम इस विनाश को रोकने में असमर्थ रहे और मानवता की नाव को शान्त जल की ओर न मोड़ पाये तो अगली पीढ़ी को इस कठिनाई को अपने हाथ में लेकर ख़तरे के पार जाने को तैयार रहना होगा।

यह पुस्तक उन बच्चों के लिए है, जो स्वयं को इन परिस्थितियों में पाते हैं और यह उन बड़े-बूढ़ों के लिए है, जिन्हें इन बच्चों की वाक़ई फ़िक्र है। पिछले पन्द्रह सालों में मैंने ये कहानियाँ लिखी हैं, जिनसे यह किताब बनी है। यह किताब मेरे अन्दर की एक चीख़ है।

Library IIAS, Shimla
H 028.5 Sh 63 A
00115989
Institute of Advance ... SHIMLA
115989
17.11.04

मुझे इस तरह की कहानियाँ लिखने पर क्यों मजबूर होना पड़ा, जिनमें मैंने मानवता को आशा और निराशा के दो ऊँचे पहाड़ों के बीच बसी घाटी की तरह चित्रित किया है।

हर तरह के प्राणियों के अस्तित्व की वास्तविकता उन्हें अनगिन इच्छाओं और मायूसियों के सामने लाकर खड़ा कर देती है और अगर हर व्यक्ति को ज़िन्दगी और जीने की सच्ची समझ हासिल करनी है तो बचपन से ही इस बात का अहसास बहुत ज़रूरी है। मुझे बहुत फ़िक्र है उन बच्चों की, जिन्हें नयी शताब्दी का स्वागत करना है। उन्हें इस सोच को विकसित करने से वंचित नहीं रखा जाना चाहिए।

हर जीवित वस्तु बच्चे की तरह होती है, क्योंकि ये सभी उस सूरज की तरफ़ मुँह किये होते हैं, जो विकास के लिए आवश्यक प्रकाश और ऊर्जा प्रदान करता है। इक्कीसवीं शताब्दी का मुक़ाबला करनेवाले युवाओं के लिए अँधेरे में रोशनी बिखेर देना एक चुनौती भरा काम हो सकता है।

इस पुस्तक को विभिन्न राष्ट्रीयतावाले अनेक कवियों के सहयोग एवं दिली दोस्तों की मदद से ही तैयार किया जा सका है, जिनका धन्यवाद शब्दों से कभी भी पूरा नहीं किया जा सकता। मेरे हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं एशिया और प्रशान्त सागरीय क्षेत्र के अनेक मित्र, जिन्होंने अकूत प्यार एवं उत्साह द्वारा मेरे प्रयत्नों को बढ़ावा दिया। यह पुस्तक उन्हीं को समर्पित है।

बच्चो, उठ खड़े होओ-निष्ठा रखो-मेहनत के लिए तैयार रहो-और सबसे ज़्यादा, एक आशावान एवं उदार हृदय रखो तथा हिम्मत से इक्कीसवीं सदी का निर्माण करो, जो तुम्हारी ही है।

2 मार्च, 1988
टोकियो, जापान

—ताजिमा शिन्जी

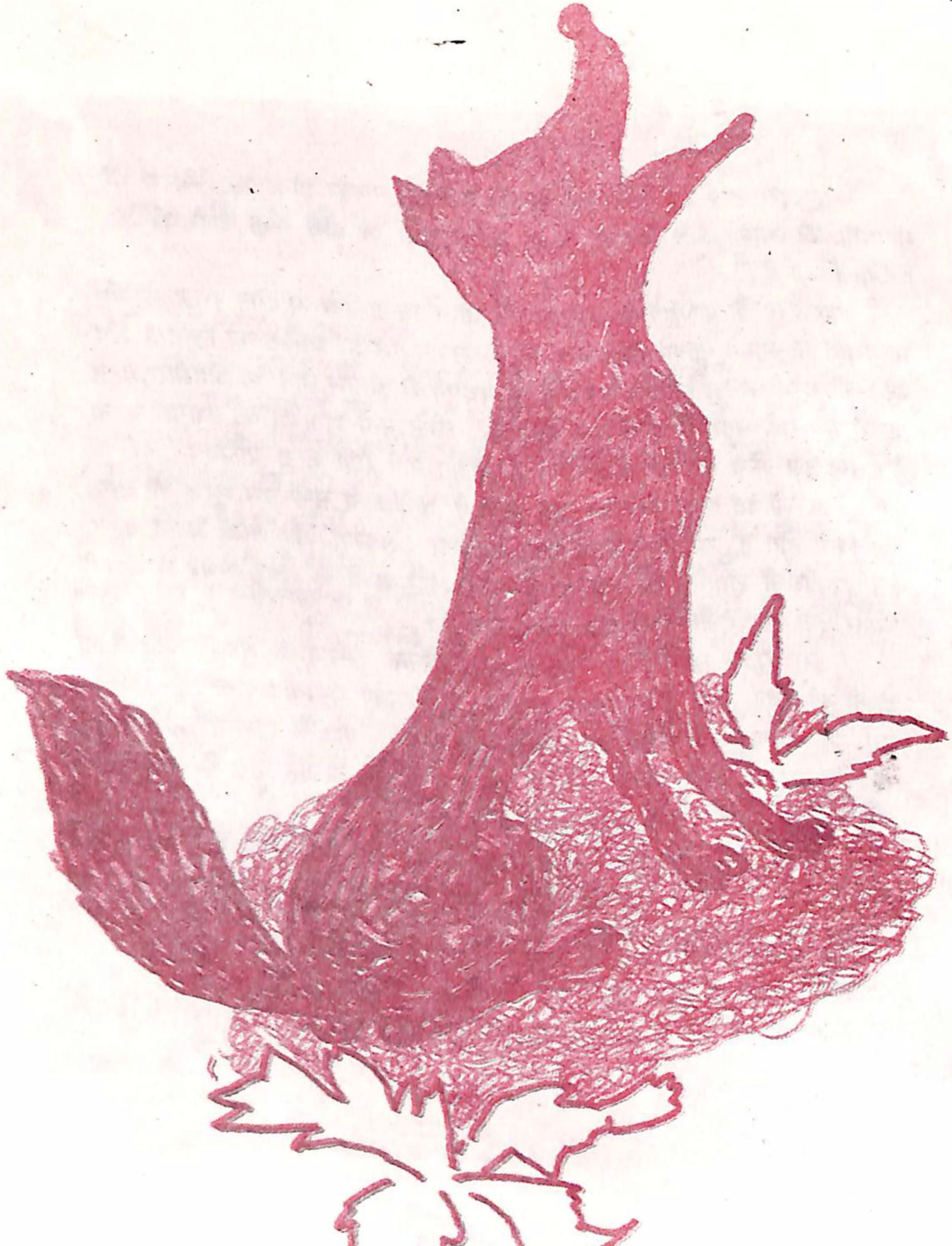

कोनकिची होमहिल

यह फ़रवरी का महीना था। सर्दी के सूरज की किरणें उस बर्फ़ पर पूरी तेज़ी से चमक रही थीं और जहाँ तक नज़र जाती थी, उन्होंने हर चीज़ को ढक रखा था। कोई और वर्ष होता तो इन पहाड़ियों पर रहनेवाला हर जानवर गहरी शीतनिद्रा में सोया होता, लेकिन इस वर्ष एक जानवर ऐसा था, जो पूरी तरह से चौकस था।

हालाँकि वसन्त की पहली सुखद गर्म हवा का आगमन अभी काफ़ी दूर था, लेकिन कोनकिची अपनी उस गहरी माँद में से बाहर सरक आया, जिसे उसने शीतनिद्रा पूरी करने के लिए खोदा था। युवा लोमड़ कोनकिची गहरी सोच में डूबा हुआ था। तो इससे पहले आप कहें कि कोई लोमड़ कैसे गहरी सोच में डूब सकता है, याद रखिये कि लोमड़ में भी भावनाएँ होती हैं और जब भी वह अत्यधिक प्रसन्न या दुःखी होता है तो वह 'कोन' शब्द का उच्चारंण करता है। इन दिनों किसी लोमड़ के लिए भी चिन्तित होने की बहुत-सी बातें घटित होती हैं।

इतनी लम्बी शरद-ऋतु में भी, जिसमें लग रहा था कि वह कभी ख़त्म नहीं होगी, कोनकिची सोचता ही जा रहा था, सोचता ही जा रहा था और उसने सोने के लिए पलक तक नहीं झपकी थी। इसलिए कोई आश्चर्य की बात नहीं कि जब वह अपनी माँद से बाहर निकला तो उसकी आँखें थकी हुईं और लाल थीं, उसकी सुन्दर ख़ाल पर शिकन पड़ी हुई थी और उसकी पूँछ की, जिस पर उसे बहुत गर्व था, रुपहली चमक ग़ायब थी।

कोनकिची को विचारों में इतना गहरा धकेल देनेवाला मामला था ...बेशक गोल्फ़ कोर्स के बारे में कुछ। गोल्फ़ कोर्स ? एक लोमड़ का गोल्फ़ से भला क्या लेना-देना ?

पिछले वर्ष के वसन्त से ही, जब पहाड़ी को खोदकर एक गोल्फ़ कोर्स में तराश दिया गया था, कोनकिची ने ईर्ष्या से मानवीय आकृतियों को कोर्स में इधर-उधर टहलते हुए गोल्फ़ क्लब्स को झुलाते हुए देखा था। ये लोग, जिन्हें 'बिज़नेसमैन' कहा जाता था, स्मार्ट नेकटाइज़ पहने सोमवार से शुक्रवार तक दफ़्तरों में इधर-उधर आते-जाते रहते थे और जब सप्ताहान्त आता तो ऐसा लगता कि उनका काम ही था हरी-भरी पहाड़ी पर आ

कर छोटी-छोटी सफ़ेद गेंदों को हवा में इधर-उधर मारना और उन्हें छोटे-छोटे, गोल छिद्रों में डालकर मज़े लेना।

कोनकिची गोल्फ़ कोर्स के चारों ओर उगी ऊँची घास में छिपकर चुपके-से इन स्मार्ट कपड़े पहने लोगों को गोल्फ़ का मज़ा लेते हुए देखता था और सोचता था—हम लोमड़ लोग निश्चय ही मेहनत और ऊब भरी ज़िन्दगी जीते हैं, ख़रगोशों और खेतों के चूहों के पीछे भागते रहते हैं और चूज़ों का पीछा करने पर किसानों द्वारा खदेड़े जाते रहते हैं।

—आह, मैं तो इन्सान बनना चाहता हूँ! मैं एक बिज़नेसमैन की ज़िन्दगी जीना चाहूँगा। ओह, मैं क्या कर सकता हूँ? क्यों नहीं, मैं हमेशा के लिए इन्सान बन जाता! ओह, लेकिन अगर मैं इन्सान बन गया तो ... यही वह समस्या थी जिसने कोनकिची को जगाये रखा था और सर्दी-भर उलझाये रखा था।

अभी जब हम कोनकिची के शरद-विचारों के बारे में पता लगा रहे थे वह अपनी माँद के दरवाज़े पर आया और चुपचाप बैठ गया—इन्हीं सवालों के बारे में विचार करता हुआ। फिर एकाएक वह उठा और अपनी नाक से पूँछ के सिरे तक खुद को झकझोरा। "मैंने लोमड़ बने रहने को तिलांजलि दे दी है!" वह चिल्लाया और उसकी आवाज़ मैदानों और पहाड़ों को पार कर गयी। आवाज़ इतनी ऊँची थी कि सागरों तक पहुँच गयी और लहरों के ऊपर उड़कर दुनिया-भर में गूँज उठी।

"मैं अब से इन्सान बनने जा रहा हूँ, इन्सान बनूँगा मैं ..." कोनकिची अपने आप बुदबुदाया।

कोनकिची ने *केन-पोन-तान* जादू का इस्तेमाल करने का फ़ैसला किया। यह *केन-पोन-तान* जादू, जो सिर्फ़ लोमड़ों को ही मालूम है, लोमड़ों को इन्सानी शक्ल में बदलने का एक तरीक़ा है। सिर पर बाँज पेड़ की पत्ती रखकर *केन* कहने से लोमड़ ठीक इन्सान जैसा ही बोलने लगेगा। फिर *पोन* कहने पर लोमड़ का शरीर, जैसा भी इन्सान वह बनना चाहे, उसमें बदल जायेगा, सिर्फ़ पूँछ ही बची रहेगी। अन्त में—हाँ, सचमुच अन्त में—*तान* कहने से पूँछ भी ग़ायब हो जायेगी तथा इस जादू को इस्तेमाल करनेवाला लोमड़ फिर पूरी तरह इन्सान बन जायेगा और वापस कभी लोमड़ नहीं बन सकेगा। कोनकिची की माँ ने उसे कई बार आगाह किया था कि वह तीसरा शब्द कभी न कहे, लेकिन अब वह उसकी सलाह की अनसुनी करने के लिए तैयार बैठा था।

युवा लोमड़ ने एक पुरानी, सूखी बाँज की पत्ती को उठा लिया जो उसकी सर्द माँद के थोड़ी-सी अन्दर पड़ी थी और उसे सिर के ऊपर रख लिया।

"कोनकिची, अपनी सनक में तुम क्या कर रहे हो ?" पहाड़ी के किनारे पर अपने घर के दरवाज़े पर बैठी उसकी माँ ने उसे कहा, "मेरे बेटे, मुझे पता है इस पूरी सर्दी-भर तुम क्या सोचते रहे हो, लेकिन इन्सान के रूप में जीवन उतना मज़ेदार नहीं है, जितना कि दूसरों को लगता है, जो इसे बाहर से देखते हैं।"

कोनकिची ने जवाब दिया, "माँ, मैंने फ़ैसला कर लिया है। चाहे कुछ भी हो, मैं इन्सान बनकर ही रहूँगा। यहाँ पहाड़ियों में फँसे रहना, जहाँ सर्दियों में खाना तक नसीब न हो और फिर हाथ में बन्दूकें थामे आदमियों द्वारा शिकार किया जाना—बहुत हो गया ! मैं तो शहर जाकर बिज़नेसमैन बनूँगा। जो तनख़्वाह मुझे मिलेगी, उससे मैं कई ज़ायकेदार ख़रगोश ख़रीदकर तुम्हारे पास लाऊँगा ..." जल्दी से अपने इस छोटे-से भाषण को समाप्त करते हुए, युवा लोमड़ ने अपनी थूथनी आसमान की ओर उठायी तथा जादू-मंत्र जपने लगा।

"कोनकिची", उसकी माँ फिर चिल्लायी, "मैंने तुम्हें पहले कभी नहीं बतलाया कि

हमारे सैकड़ों लोमड़ दोस्तों ने *केन-पोन-तान* जादू का इस्तेमाल इन्सान बनने के लिए किया और फिर वे इन पहाड़ियों को छोड़कर चले गये। कोई नहीं जानता कि इसके बाद उनका क्या हुआ ? मैं तुझसे विनती करती हूँ, एक बार फिर सोच ले, मेरे बच्चे ... '' लेकिन इससे पहले कि उसकी दुलार-भरी माँ अपनी बात पूरी कर सकती, कोनकिची चिल्लाया, ''माँ, मैं चला !'' और अपने सामनेवाले दायें पंजे से उसने बाँज की पत्ती को ज़ोर-से पटका और चिल्लाया, ''*केन-पोन-ता .. न।*''

ठीक वहीं, जहाँ कोनकिची था, एक नवयुवक खड़ा था, जिसने दायाँ हाथ सिर पर रखा हुआ था। वह लम्बा नवयुवक, जिसने गहरे नीले रंग का स्मार्ट-सा सूट पहन रखा था और लाल नेकटाई लगायी हुई थी। अपने नये इन्सानी स्वरूप में कोनकिची ने अपने हाथ को धीरे-धीरे सिर से हटाया और अपनी छाती पर लहराती टाई को डरते-डरते छुआ। फिर धीरे-से अपने हाथ को पीछे बढ़ाकर महसूस किया ... पूँछ भी नहीं थी ! वह तो इन्सानी आवाज़ों और शब्दों के साथ बोल भी सकता था। यह सोचकर कि इन्सान के रूप में उसका सुनहला भविष्य सामने था और वह फिर कभी दुबारा लोमड़ नहीं बनेगा, कोनकिची सचमुच बहुत खुश था।

जब कोनकिची खुश हो रहा था, उसकी माँ उसे सूनी आँखों से निहार रही थी और उसकी अपलक आँखों से आँसू बहकर उसके चेहरे पर आ रहे थे। उसे दुखी देखकर उसके बेटे ने, जिसका कायापलट हो गया था, कहा, ''मैं जल्दी ही लौट आऊँगा, तो ...'' और तेज़ी से पहाड़ी के किनारे नीचे की ओर ओझल हो गया।

पहाड़ी से नीचे आकर कोनकिची ने स्वयं को शहर की सड़क पर पाया। बेशक़ उसे पहले चिन्ता थी कि कोई चिल्ला उठेगा, ''देखो, लोमड़ सूट पहनकर घूम रहा है... एक सचमुच का लोमड़ !'' इसलिए सहमे-सहमे उसने किसी से भी सीधी नज़र नहीं मिलायी। लेकिन जब वह शहर में से गुज़रा और ऐसा नहीं लगा कि किसी को भी उस पर शक है तो कोनकिची का हौसला धीरे-धीरे बढ़ गया। यहाँ तक कि छाती आगे फुलाये और कन्धे पीछे को झटककर चलने से वह लगभग पीछे की ओर गिर ही पड़ा, लेकिन अब उसे विश्वास हो गया कि वह सौ फ़ीसदी इन्सान बन गया है।

फिर वह रुककर एक चौराहे पर खड़ा हो गया और चारों ओर खड़ी ऊँची, चमचमाती इमारतों को देखने लगा। जैसे ही उसकी आँखें एक गगनचुम्बी इमारत की ओर ऊपर उठ रही थीं, वे दीवार पर चिपके एक बड़े पोस्टर पर ठहर गयीं—

तुरन्त जरूरत है कम्पनी के लिए एक कामगार की!
हमें तलाश है किसी ऐसे व्यक्ति की जिसे जानवरों से प्यार हो।
उम्र 25 या कम
अच्छी तनख़्वाह। अन्दर पता करें।
माउनटेन फ़ैशन्स कम्पनी लिमिटेड

"यह तो मेरे लिए है !" कोनकिची ने स्वयं से कहा, और वह तेज़ी से चलकर लम्बे-चौड़े सामनेवाले दरवाज़े पर पहुँच गया, ठेलकर उसे खोला और इमारत में घुस गया।

सीधे स्वागत-कक्ष में जाकर, कोनकिची ने वहाँ बैठी युवती से ऊँची आवाज़ में कहा, "गुड ऑफ़्टरनून ! इस इमारत में सामने लगे पोस्टर के बारे में जिस पर लिखा है 'कम्पनी को कामग़ार की ज़रूरत है'—क्या इसका मतलब है 'बिजनेसमैन' चाहिए ?"

"क्या ? ओ, ठीक, हाँ, मेरा ख़याल है, यही मतलब है। माफ़ कीजिए, लेकिन ..."

"ओह, फिर तो ठीक है ! मैं यहाँ बिज़नेसमैन बनने के लिए आया हूँ", कोनकिची ने कहा, "मेरा ख़याल है यही कम्पनी मेरे मतलब की है। माफ़ कीजिए सुश्री ! इस कम्पनी के अध्यक्ष कहाँ है ? मैं कम्पनी के अध्यक्ष से तुरन्त मिलना चाहूँगा।"

आश्चर्य से पलकें झपकाते हुए स्वागत करनेवाली युवती ने बिना सोचे कहा, "अध्यक्ष तीसरी मंज़िल पर अपने दफ़्तर में हैं। कमरा नम्बर 33, लेकिन ..." फिर वह कोनकिची के चेहरे पर गम्भीर-भाव को देखकर अपनी हँसी नहीं रोक सकी, क्योंकि उस भाव के कारण वह लोमड़-जैसा लग रहा था। कोनकिची जल्दी से स्वागत-कक्ष से बाहर चला आया।

कम्पनी अध्यक्ष के दफ़्तर की तरफ़ जाते हुए लम्बे गलियारे में लगे शीशे के सामने से गुज़रते हुए कोनकिची ने यूँ ही अपनी परछाईं को देखा। ख़ैर, चेहरा तो इन्सान-जैसा ही था लेकिन इन्सानी हाव-भाव कुछ-कुछ लोमड़ से मिलता-जुलता था। उसकी आँखें चालाकी से चमक रही थीं, चेहरा लम्बोतरा-सा था और मुँह ऐसा, जो किनारों से ऊपर उठा हुआ था तथा कान सीधे तने खड़े थे।

"गुड ऑफ़्टरनून, प्रेजिडेंट सर ! ... मैं कोन। मुझे पूरी उम्मीद है कि आप मुझे इस कम्पनी में बिज़नेसमैन बनने देंगे। मैं बिज़नेसमैन बनना चाहता हूँ। लोमड़ बने रहना बिल्कुल..." कोनकिची ने तुरन्त अपना मुँह बन्द कर लिया, और फिर शुरू किया, "नहीं, सच में, चाहे मैं देखने में कुछ-कुछ लोमड-जैसा लगता हूँ, दिल से मैं सचमुच भरोसेमन्द और सन्त-सा ईमानदार इन्सान हूँ।"

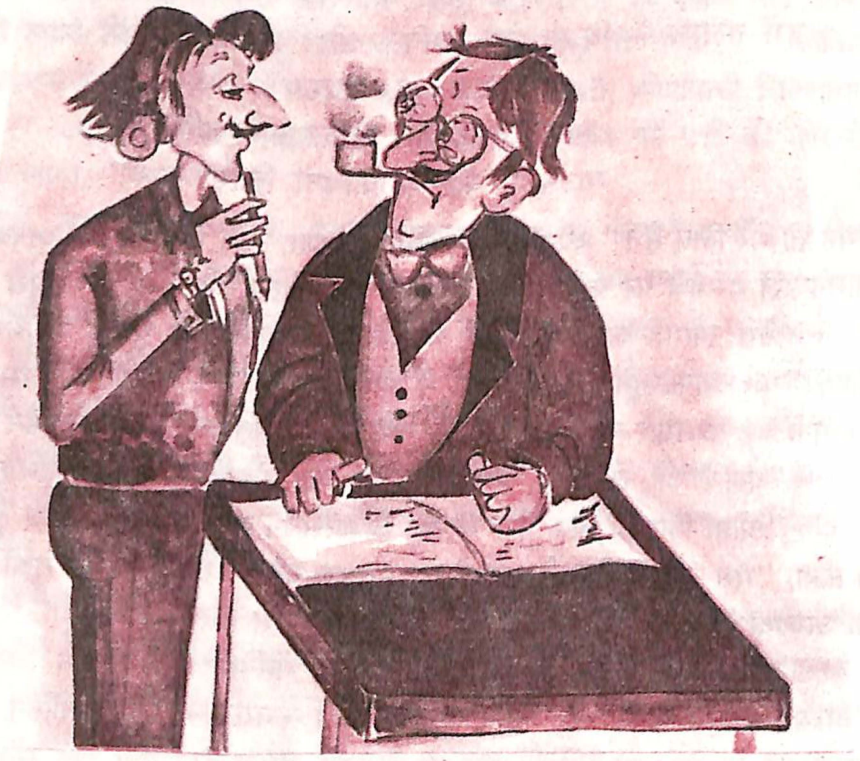

कोनकिची के बोलने पर मोटे, लाल चेहरेवाले अध्यक्ष ने अपनी मेज़ पर फैले काग़ज़ों से अपना सिर उठाया और दाँतों के बीच सिगार फँसाये-फँसाये बहुत ही ऊबे और थके तरीक़े से कहा, ''ठीक है, पहले तुम मुझे अपना परिचय-पत्र तो दिखाओ।''

वह काफ़ी थका हुआ था, क्योंकि सुबह से अब तक उसने बहुत-से लोगों का साक्षात्कार लिया था।

कोनकिची ने अपने जीवन में एक बार भी परिचय-पत्र शब्द नहीं सुना था, इसलिए उसने उलझन-भरी आँखें झपकाते हुए अध्यक्ष से पूछा, ''ऊँह, माफ़ कीजिए, परिचय-पत्र क्या होता है ? दरअसल मैं आज अपने साथ कुछ भी नहीं लाया।''

''क्या ? तुम्हें पता नहीं, परिचय-पत्र क्या होता है ? ओह, समझा, यह क्या मज़ाक़ है...'' अध्यक्ष ने अपनी आँखें चौडी खोलकर कोनकिची को घूरा। इस बीच वह होंठों में फँसे सिगार को जीभ से घुमाता रहा।

"नहीं सर, यह मज़ाक़ नहीं है", कोनकिची ने कहा, "मुझे सचमुच पता नहीं कि जिसे आप परिचय-पत्र कहते हैं वह क्या चीज़ है, लेकिन बिज़नेसमैन बनने के लिए क्या इसका होना इतना ज़रूरी है ?"

कम्पनी के अध्यक्ष ने कोनकिची को इतनी तेज़ी से घूरा कि उसकी आँखों ने जैसे कोनकिची के शरीर में छेद कर दिये हों। "अच्छा, अगर तुम सचमुच ही नहीं जानते तो सुनो... परिचय-पत्र काग़ज़ का एक पर्चा होता है, जिस पर आपने लिखा होता है कि आपके माता-पिता कौन हैं, आप कब और कहाँ पैदा हुए, आपने किस स्कूल में शिक्षा प्राप्त की और अब तक आपने क्या काम किया है ? कमाल है ! कोई कैसे किसी ऐसे सनकी को अपनी कम्पनी में काम करने दे सकता है, जिसे परिचय-पत्र के बारे में पता न हो। मेरी कम्पनी को तुम्हारी ज़रूरत नहीं है। चलो, निकलो बाहर ! कोई साक्षात्कार नहीं होगा !" वह चिल्लाया।

"ख़त्म !" कोनकिची ने खुद से कहा, "अगर मैं उसे अपने अतीत के बारे में बतला भी देता तो ... वह पहाड़ी पर रहना और ख़रगोशों के पीछे दौड़ना और इसी तरह ... कभी-कभी नीचे गाँव में चुपके-से जाकर मुर्ग़ियाँ चुराना ... और फिर कभी स्कूल भी तो नहीं गया।"

अध्यक्ष ने वहाँ बैठे-बैठे उदास कोनकिची को देखा और फिर चिल्लाया, "ऐ सुनो, तुम ज़रूर कोई बेनाम बेवकूफ़ हो। कम-से-कम अपना नाम तो बताना चाहिए कमरे में घुसते समय। तुम्हारे पास क्या इतनी भी कॉमन सेन्स नहीं ?"

कोनकिची, जो उलझन में फँसा जान पड़ता था, बुड़बुड़ाया, "अरे ... ओ ... ख़ैर, मेरा नाम बेवकूफ़ नहीं, कोनकिची है। मैं ऊपर उन पहाड़ियों में रहता हूँ ... मेरा घर उन पहाड़ियों पर हैं। होमहिल, कोनकिची होमहिल मेरा नाम है।" कोनकिची ने जो बात सबसे पहले दिमाग़ में आयी, कह दी और इस बात से खुश हुआ कि उसे तरकीब सूझ गयी।

"ऊँह, फिर मेरा पता, हाँ ... ओह, ओह, पहाड़ी के परे, पहाड़ी के सिरे एक माँद में ... हाँ, वही है ओवरहिल सिटी, होमहिल स्ट्रीट में, वहीं रहता हूँ मैं।"

यह सुनकर अध्यक्ष ने मुँह बिचकाया और कहा, "अजीब नाम है यह। और ओवरहिल सिटी, होमहिल स्ट्रीट ... मैंने ऐसा नाम पहले नहीं सुना ..." फिर उसने कोनकिची के गम्भीर और चिन्तित चेहरे को देखा, "ख़ैर, हो सकता है तुम पहाड़ी के पार वाले लोमड़ के भूत हो !" और इसके साथ ही वह ज़ोर से हँस पड़ा।

कोनकिची का कलेजा मुँह को आ गया और उसने सोचा; "यही अन्त है ! सचमुच,

क्या इसे पता है ?'' और उसका इन्सानी जिस्म पसीने से तर-ब-तर हो गया। उसने उत्तर दिया, ''बिल्कुल नहीं ! अध्यक्ष महोदय, मैं एक इन्सान हूँ। मैं लोमड़ की तरह जानवर नहीं हूँ। क्यों, नहीं, देखिये मेरी तो पूँछ भी नहीं है। मैं एक शरीफ़ इन्सान हूँ हाँ !''

अध्यक्ष और ज़ोर से हँसा। ''हा, हा, हा ... बढ़िया मज़ाक़ है, बढ़िया मज़ाक़ है ! ख़ैर, तुम्हारे मुँह को देखकर मुझे लोमड़ की याद आती है और इसीलिए मैं ऐसी बात कहने से स्वयं को नहीं रोक सका। तुम तो जानते हो कि सचमुच का ज़िन्दा लोमड़ मेरे दफ़्तर में पाँव नहीं रख सकता। अरे भाई, अगर तुम्हें बुरा लगा हो तो मुझे खेद है।'' लग रहा था कम्पनी का अध्यक्ष अब अच्छे मूड में था।

''ख़ैर, अगर तुम्हारे पास परिचय-पत्र नहीं है तो तुम मुझे मोटी-मोटी बातें क्यों नहीं बता देते ! तुमने स्कूल की परीक्षा पास की है ?''

''स्कूल ?'' कोनकिची फिर मुसीबत में फँस गया था। बेशक उसने स्कूल की परीक्षा पास नहीं की थी। सच तो यह है कि शायद सारी दुनिया में एक भी लोमड़ ऐसा हो, जिसने स्कूल की शिक्षा प्राप्त की हो, लेकिन यह सोचकर कि इस कम्पनी में ऐसे किसी को भी नौकरी नहीं मिल सकती जिसने स्कूली शिक्षा समाप्त न की हो, कोनकिची ने जल्दी से कहा, ''मैं ... मैंने सभी में शिक्षा प्राप्त की है। प्राइमरी स्कूल से लेकर यूनिवर्सिटी तक ... कोन।''

''ओह, ऐसा है क्या ? जहाँ तक स्कूलों का सम्बन्ध है, हर तरह के हैं। वैसे तुम किस क़िस्म की यूनिवर्सिटी में पढ़े हो ?''

''देखिये, ओह, वह .. नेशनल... नेशनल एनिमल पार्क यूनिवर्सिटी।'' कोनकिची को एकाएक नेशनल पार्क याद हो आया, जो गोल्फ़ कोर्स के पीछे फैला हुआ है।

''ओह, बढ़िया ! नेशनल यूनिवर्सिटी, हाँ ?'' अध्यक्ष अब उसमें दिलचस्पी लेने लगा था, ''बढ़िया, हाँ। सच, मैं सोच ही रहा था कि मुझे एक अच्छे कॉलेज ग्रैजुएट की आवश्यकता है। ख़ैर, है तो नेशनल यूनिवर्सिटी ही न, पार्क या एनिमल पार्क की कोई बात नहीं। और फिर तुम नेशनल यूनिवर्सिटी के स्नातक हो। ठीक है, मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी कम्पनी के लिए तुरन्त काम करना शुरू कर दो।''

कोनकिची की खुशी का ठिकाना न रहा। बिना सोचे उसने एक 'कोन' किलकारी भरी और लगभग नाचने ही लगा, एक लोमड़-नाच।

''लेकिन मिस्टर होमहिल, सुनो'', अध्यक्ष ने गम्भीर भाववाले चेहरे से कोनकिची की खुशी में बाधा डालते हुए कहा, ''तुम किसी विशेष कार्य में दक्ष हो ? हालाँकि हम

सभी इन्सान ही हैं, लेकिन एक कुशल और अकुशल आदमी में बहुत फ़र्क़ होता है।''

कोनकिची फिर चौंक उठा, लेकिन उसने एक लम्बी साँस भरी और कहा, ''ख़ैर, हाँ... वह ... ख़रगोश, खेतवाले चूहे, मुर्ग़ियाँ, मैं उनका पीछा कर सकता हूँ ... ओह मेरा मतलब है मैं ख़रगोश, चूहे, मुर्ग़ियाँ पाल सकता हूँ। मैं एनिमल पार्क्स का योग्य मैनेजर हूँ।''

अब खुश होने की बारी अध्यक्ष की थी, ''वाह, वाह, सच ? हाँ, तुम ही मेरी कम्पनी के लिए सबसे उपयुक्त आदमी हो, ऐसा मुझे लग रहा है। मिस्टर होमहिल, मुझे ऐसे व्यक्ति की तलाश थी, जो जानवरों के बारे में सब कुछ जानता हो। और फिर तुम सीधे यहीं चले आये। ख़ैर, यह तो तुम्हें पता ही है कि हमारी कम्पनी इस देश की सबसे बड़ी फ़र कम्पनी है। तो, मिस्टर होमहिल यह तय रहा और मैं चाहता हूँ तुम कल से ही काम शुरू कर दो।''

अध्यक्ष ने अपने थुलथुले शरीर को उठाने का यत्न किया और पैरों पर खड़े हो जाने में सफल हो जाने पर उसने सन्तोषजनक भाव से कोनकिची के कन्धे को ज़ोर से थपथपाया।

फ़र कम्पनी—किन्हीं अज्ञात कारणों से ये दो शब्द सुनकर कोनकिची के अपने सीने में एकाएक दर्द का अहसास हो उठा।

कोनकिची कम्पनी की इमारत से बाहर आया और शहर की सड़कों पर चलते हुए फ़र कम्पनी के बारे में सोचने लगा। चलो, इससे क्या फ़र्क़ पड़ता था कि वह किसी कम्पनी में काम करता है। ज़रूरी बात तो यह थी कि उसके पास अब नौकरी थी। आख़िर वह बिज़नेसमैन बन गया था।

बिज़नेसमैन होने के नाते अब उसे अँधेरी माँद में नहीं रहना पड़ेगा। बरसात होने पर भी फ़िक्र नहीं होगी। ख़रगोश न पकड़ पाने या मुर्ग़ियाँ न चुरा पाने की हालत में भी कई-कई दिनों तक भूखा नहीं रहना पड़ेगा। अब वह काम करके मोटी तनख़्वाह पा सकेगा और ढेर सारी मुर्ग़ियाँ तथा ख़रगोश का मांस ख़रीदकर फ्रिज़ या फ्रीज़र में रख सकेगा और जब जी चाहे खा सकेगा।

''कोन, कोन ! कोन, कोन !'' अपने अपार्टमेंट में वापिस पहुँचकर कोनकिची ने अपना नुकीला चेहरा छत की ओर उठाया और प्रसन्नता भरी पलकें झपकते हुए ख़ुशी से चिल्ला उठा।

उस रात कोनकिची सातवें आसमान पर सोया और उसके दिल में पहाड़ियों के सपने भरे थे।

बिज़नेसमैन के रूप में कोनकिची का जीवन अगले दिन से शुरू हो गया। उसका पहला काम था विक्रय विभाग में, जहाँ वह फ़र से बने कोटों की बिक्री से अर्जित पैसे का हिसाब लगाता था। बेशक शुरू में कोनकिची को उसके सहकर्मियों द्वारा सब कुछ सिखलाया गया, लेकिन जल्दी ही कोनकिची अपने काम के बारे में सब कुछ सीख गया। सच तो यह है कि काम करते समय वह एक तरह से मस्ती में झूमता रहता, क्योंकि बिजनेसमैन के रूप में काम कर पाने की उसे बहुत ख़ुशी थी। जल्दी ही वह कम्पनी के सबसे अधिक परिश्रमी कर्मचारी के रूप में जाना जाने लगा।

अध्यक्ष को यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि जबसे कोनकिची ने कम्पनी में काम करना शुरू किया था, अन्य कर्मी भी उसकी परिश्रम-भरी भावना में रम गये थे और कम्पनी की बिक्री धीरे-धीरे बढ़ने लगी थी। वह कोनकिची को ज्यादा तनख्वाह देने लगा।

कोनकिची स्वयं काफ़ी खुशमिज़ाज था। जब सप्ताहान्त आता तो वह गोल्फ कोर्स पर चला जाता, जैसी कि उसकी इच्छा रही थी। लेकिन सच तो यह है कि जब उसने गोल्फ खेलने का यत्न किया तो उसे उतना मजा नहीं आया, लेकिन ...फिर भी उस व्यक्ति के लिए जो पहले एक लोमड़ था, यह कुछ कम बात नहीं थी कि इतने बड़े गोल्फ़ कोर्स में कोई दूसरा व्यक्ति उसका भारी गोल्फ़ बैग ढोता फिरे, जबकि वह स्वयं उन छोटी-छोटी सफ़ेद गेंदों को गर्व के साथ इधर-उधर मारता रहे।

पहाड़ियों के बीच बने इस गोल्फ़ कोर्स में, जहाँ कोनकिची पैदा हुआ था और जहाँ लोमड़ कोनकिची ऊँची घास के झुरमुटों में छिपकर लोगों को देखा करता था, जब कोनकिची गोल्फ़ खेलता था तो वह स्वयं को खुशी से "कोन, को ... न !" चिल्लाने से या लोमड़-नृत्य करने से नहीं रोक पाता था।

"वास्तव में तुम मेरी कम्पनी की शान हो", अध्यक्ष अक्सर उसके सहकर्मियों के सामने कोनकिची की प्रशंसा किया करता था—"मेरे प्यारे सहकर्मियों, होमहिल आप सभी के अनुसरण के लिए एक अच्छा उदाहरण है। उसे देखिये और उससे सीखिये।"

ज्यों-ज्यों यह सिलसिला चलता रहा, त्यों-त्यों कोनकिची और भी ज्यादा मेहनत करने के इरादे मजबूत करता रहा। वह काम के लिए इतनी अधिक दौड़-धूप करता, जैसे उसके पाँवों तले अंगारे बिछे हों। इस तरह दिन हफ़्तों और महीनों में बदलने लगे और

उसके चेहरे से लगने लगा कि उसे बिज़नेसमैन के अपने जीवन में मज़ा आ रहा था।

लेकिन कोनकिची पहाड़ियों में अपने घर को कभी नहीं भूल पाया। हर महीने, ज्यों ही उसे तनख़्वाह मिलती, वह बाज़ार जाकर कई ज़िन्दा ख़रगोश और मुर्गियाँ ख़रीदकर गोल्फ़ कोर्स के साथ पहाड़ी के किनारे अपनी माँ के पास ले जाता।

हर बार जब वह अपने बचपन के घर लौटता, उसकी माँ गर्मजोशी से उसका स्वागत करती, लेकिन उसकी आँखों में दर्द का भाव बना रहता।

"कोन, कोन ! मेरे प्यारे कोनकिची, इतनी बढ़िया चीज़ें लाने के लिए शुक्रिया ! लेकिन यह सब लाते रहने की अब ज़रूरत नहीं है। अब हर लिहाज़ से तुम एक शानदार इन्सान हो कोन और पूरी तरह से मानवीय। तुम्हें अब अपने लोमड़वाले अतीत को भूलने की कोशिश करनी चाहिए। तुम्हारी माँ तो किसी तरह जी ही लेगी बेटे !"

कोनकिची अपनी माँ की भावनाओं को समझता था लेकिन वह समझ नहीं पाता था कि क्या कहे ? क्योंकि उसे अहसास होने लगा था कि वह धीरे-धीरे लोमड़ों की भाषा भूलने लगा था। वह उसे सिर्फ़ देखता, ख़ुशी से मुस्कराता और पहाड़ी से नीचे उतरकर शहर वापस चला जाता। जब अगली तनख़्वाह का दिन आता तो कोनकिची फिर अवश्य वहीं होता, अपनी माँ के लिये ख़रगोश तथा मुर्गियाँ थामे, पहाड़ी पर चढ़ता हुआ।

महीनों गुज़र गये और बहार गर्मी में बदल गयी, गर्मी पतझर में। कोनकिची अपनी नौकरी में मेहनत करता रहा और नवम्बर में एक दिन जब सर्दी क़रीब आ रही थी तो उसने ध्यान दिया कि दुकान में बेचने के लिए फ़र से बने काफ़ी कम कोट रह गये थे।

"ओह, इससे तो काम नहीं चलेगा", कोनकिची ने स्वयं से कहा, जैसे कि कम्पनी का अध्यक्ष कहा करता था, "सर्दी आने पर हमें बहुत-से फ़र के कोट बेचने चाहिए।" इसके साथ ही वह कम्पनी के वेयर हाउस में चला गया।

कोनकिची एक बार भी फ़र के वेयर हाउस में नहीं गया था, क्योंकि वह बिक्री का हिसाब जोड़ने और काग़ज़ पर हिसाब लिखने में ही खोया रहता था।

ज्यों ही कोनकिची ने वेयर हाउस का दरवाज़ा खोला, वैसे ही उसके गले से दर्द-भरी एक चीख़ निकली। उस बड़े वेयर हाउस में इतनी सारी जानवरों की ख़ालें उल्टी लटकी हुई थीं—गिलहरी, ख़रगोश, वीज़ल, सेबल, बिज्जू, शेर, भालू ... इतनी कि गिनी भी न जा सकें, वे सारी ठीक वैसी ही थीं—जैसी जानवरों से उतारी गयी होंगी। जैसे ही धीरे-धीरे कोनकिची अन्दर घुसा उसे लगा कि वे सारी ज्योतिहीन आँखें उसी को देख रही हैं।

"ओह यह ... ओह क्या इतना सारा फ़र, इतनी सारी ख़ालें, इस कम्पनी के पास

हैं ... लेकिन कितने दुख की बात है, इतने सारे बिज्जू, इतने सारे वीज़ल वैसे-के-वैसे जिन्हें मैं जानता था, मार दिये गये और लोगों द्वारा उनकी ख़ाल उधेड़ दी गयी ... कितनी दुखद बात है। ओह, लेकिन क्या हो सकता है, वर्ना हमारी कम्पनी इतने ज्यादा फ़र के कोट कैसे बेच पाती ? हाँ, है तो यह बहुत बुरी बात .. क्यों ?''

कोनकिची फ़र्श पर से कूद पड़ा, क्योंकि उसकी नज़र एकाएक किसी चीज़ पर जा पड़ी थी। वेयर हाउस के पिछवाड़े लोमड़ों की ख़ालें थीं, उल्टी लटकी हुईं और एक साथ पैक की हुई। कुछ तो ऐसी लटकी थीं, जैसे उनकी आँखें दर्द से बन्द हो गयी हों और कुछ अन्य लोमड़ों की आँखें अधखुली थीं और शून्य में घूर रही थीं। कुछ चेहरे तो कोनकिची को अपने भाइयों और दोस्तों की याद दिला रहे थे।

कोनकिचो बिना हिले-डुले खड़ा रहा, सिवा इसके कि उसकी टाँगें काँपती रहीं और दाँत भय से किटकिटाते रहे। जल्दी ही आँसू उसके दिल से आँखों से भरकर गालों पर बह निकले।

''हाय... मेरे इतने सारे साथी मारे गये ... इतने सारों की ख़ाल उधेड़ दी गयी ... बेच दी गयी ... मैं सोच भी नहीं सकता था कि यह सब हो रहा है ...''

उस रात कोनकिची सो नहीं सका। ज्यों ही वह सोने के लिए अपनी आँखें बन्द करता, मरे हुए लोमड़ों के चेहरे, जो उसके मित्रों की तरह थे, उसकी आँखों के सामने तैरने लगते या उसे सपना आने लगता कि शिकारी कुत्ते उसका पीछा कर रहे हैं। फिर वह उठकर बिस्तर में सीधा बैठ जाता, आँखें खुलकर फैल जातीं और ज़िस्म ठण्डे पसीने से भर उठता। ''मैं तो इन्सान हूँ। मेरा इस सबसे कोई ताल्लुक नहीं है'', उसने स्वयं से बार-बार कहा, लेकिन उस रात उसे नींद आयी ही नहीं।

अगले दिन सुबह काम पर कोनकिची को अध्यक्ष के दफ़्तर में बुलाया गया। अध्यक्ष ने मुस्कराकर उसका स्वागत किया, लेकिन बातचीत का लहजा गम्भीर था।

''होमहिल, मेरे बच्चे ! तुम हमेशा मेरे लिए बहुत अच्छे काम करते हो। सच तो यह है कि मेरे कम्पनी के तुम आदर्श कर्मी हो। मुझे ख़ुशी है कि तुम हमारी कम्पनी में काम करते हो। लेकिन अब एक समस्या आ खड़ी हुई है। जैसा कि तुम्हें पता है सर्दी आ रही है और हमारे पास फ़र की बेहद कमी है। बेशक हमें और फ़र चाहिए। तुम्हें तो जानवरों के बारे में काफ़ी जानकारी है, इसलिए मैं सोच रहा था कि अगर तुम कल पहाड़ी जाकर हमें फ़र के लिए कुछ जानवरों का शिकार करके दे सको तो अच्छा रहेगा। मेरे बच्चे, अगर तुम यह काम ठीक से कर सकोगे तो मेरा इरादा है कि तुम्हारी तनख़्वाह बढ़ाकर तुम्हें तैयार माल की आपूर्ति विभाग का मैनेजर बना दिया जाय।''

जब कोनकिची ने 'तनख़्वाह में बढ़ोत्तरी' और 'मैनेजर' जैसे शब्द सुने तो वह सब कुछ भूल गया और उत्साह से उसे झुरझुरी-सी आ गयी। "ओह, अध्यक्ष महोदय, सर शुक्रिया ! हाँ, मैं कल सुबह और फ़र लाने के लिए पहाड़ी पर जाऊँगा", उसने उत्तर दिया।

अध्यक्ष के दफ़्तर से बाहर निकलने पर उसने अपने आपसे से कहा, "ख़ैर, अब तो तुम आदमी हो। तुम्हें अब ख़ुद को लोमड़ की तरह नहीं बने रहने देना चाहिए। तुम इस कम्पनी में बिज़नेसमैन हो और इसलिए तुम्हें कम्पनी द्वारा फ़र के बने ज़्यादा-से-ज़्यादा कोट बेचने के लिए जो भी ज़रूरी हो, करना चाहिए। भूल जाओ तुमने कल जो कुछ देखा था। जानवरों के लिए पहाड़ी पर जाना है और इसके लिए दुखी होने की ज़रूरत नहीं।"

अगली सुबह शिकारियों का एक बड़ा दल पहाड़ियों के लिए रवाना हो गया। कोनकिची उनके साथ था और उसके पास भी एक बन्दूक़ थी। शिकारियों के ठीक पीछे-पीछे शिकारी कुत्तों का एक झुण्ड था और कभी-कभी कुछ कुत्ते कोनकिची को यूँ सूँघते थे, जैसे जानते हों कि वह लोमड़ था और डर से उसके पसीना छूटने लगता। कोनकिची शिकारियों के साथ गिरोह के आगे चला आया, जहाँ वह उन तंग करनेवाले कुत्तों से दूर रह सके।

बन्दूक़ की गोली की आवाज़ से शिकार शुरू हुआ। कुत्तों की आँखें लाल होकर चमकने लगीं और वे उत्तेजित होकर पहाड़ियों पर भाग गये। शिकारियों ने बन्दूक़ें भर लीं और झाड़ियों में छिपकर बैठ गये। कोनकिची झुककर बैठ गया, उसकी उँगली बन्दूक़ के घोड़े पर थी और वह थोड़ा-सा काँप रहा था।

"कई बार", कोनकिची ने सोचा, "माँ ने मुझे शिकारियों से सावधान रहने को कहा था, लेकिन इस बार तो मेरे अपने हाथ में बन्दूक़ है" बिना समझे वह थोड़ा-सा मुस्कराया।

उत्तेजना से भौंक रहे कुत्तों की आवाज़ें इन्तज़ार कर रहे शिकारियों के पास आती लगीं। "अब किसी भी समय," शिकारियों में से एक ने कहा, और जैसे ही उसने बन्दूक़ कंधे तक उठायी, उसकी आवाज़ काँपने लगी।

और तब यह घटित हुआ। कोनकिची ने अपने सामने की पैम्पास घास को हिलते हुए देखा और फिर कुछ बाहर निकला और उसकी ओर भागा। उसके पीछे एक बड़ा-सा शिकारी कुत्ता था, जिसकी आँखें पीछा करने की उत्तेजना से चौड़ी हो रही थीं। अपना जीवन बचाने के लिए भाग रहा जानवर एक रुपहली लोमड़ी थी, जिसका फ़र बेहद सुन्दर था।

"वाह ! इतना सुन्दर फ़र कितना महँगा होगा !" उसे अहसास ही नहीं हुआ कि वह क्या कर रहा है। उसने बन्दूक़ उठायी और घोड़ा दबा दिया।

धाँय !

सुनहरी लोमड़ी हवा में ऊँची उछली और फिर अगली टाँगें समेटे, एक अकेली 'कोन' चीख़ मारते हुए ज़मीन पर आ गिरी।

धाँय ! धाँय ! धाँय ! जैसे ही पागलों की तरह भौंकते हुए कुत्तों ने जानवरों को पहाड़ी से नीचे की ओर धकेला, जहाँ शिकारी इन्तज़ार कर रहे थे तो पहाड़ियाँ बन्दूक़ की गोलियों की आवाज़ों से गूँज उठीं।

कोनकिची धीरे-धीरे चलकर गिरी हुई लोमड़ी के पास गया और उसे देखने का प्रयास करते हुए पूँछ से पकड़कर उठाया और उधर ले गया, जहाँ शिकारी गोल बाँधे खड़े थे। कुछ ऐसा महसूस करते हुए जिसे वह बयान नहीं कर सकता था, कोनकिची अकड़ कर चल रहा था, उसकी खूनी लाल आँखें ठीक सामने देख रही थीं और उसका चेहरा जो हल्का ज़र्द पड़ गया था एक अजीब भाव लिये हुए था।

शिकारियों के झुण्ड के सामने रुककर उसने लोमड़ी को उपर ऊँचा उठाया ताकि सभी उसे देख सकें। उसका हाथ काँप रहा था।

"ओ ... ह... !" कई लम्बी साँसें और आश्चर्यचकित आवाज़ें कोनकिची के कानों तक पहुँचीं। तब कोनकिची ने कम्पनी के अध्यक्ष को, जो साथ आया था, उत्तेजना भरे स्वर में कहते हुए सुना, "होमहिल, मेरे बच्चे, तुमने फिर कमाल कर दिखाया ! मैं इस बिज़नेस में कई सालों से हूँ, लेकिन मैंने इतनी सुन्दर रुपहली लोमड़ी नहीं देखी। इसके अलावा तुमने अपने आपको बन्दूक़ चलाने में भी अव्वल साबित कर दिया है। हाँ, सचमुच तुम्हारे बारे में मैं शुरू से ही ठीक था ..."

प्रशंसा के ये शब्द सुनकर कोनकिची मुस्कुराया। स्वयं पर गर्व महसूस करते हुए, अध्यक्ष को और प्रभावित करने के लिए कोनकिची ने उस लोमड़ी का चेहरा ऊपर की ओर उठाया, जिसे उसने मार गिराया था। रुपहली लोमड़ी के चेहरे पर नज़र डालते हुए जिसकी आँखें दर्द-भरी मौत के अहसास में बन्द थीं, कोनकिची के अन्दर एक बम-सा फट पड़ा।

"आह !" उसने स्वयं को चीख़ते हुए सुना और उसने तुरन्त लोमड़ी को नीचे गिरा दिया। फिर कम्पनी के अध्यक्ष और अन्य शिकारियों की आश्चर्यचकित नज़रों की परवाह न करते हुए उसने अपने दूसरे हाथ से बन्दूक़ भी गिरा दी और फिर मुड़कर पहाड़ियों की ओर उतनी तेज़ी से भागा, जितनी तेज़ी से उसकी टाँगें उसे ले जा सकीं। कभी इस पेड़ से टकराता, कभी उस पेड़ से, कभी बेलों तथा गिरे पेड़ों के तनों से उलझता वह अन्धाधुन्ध पहाड़ी पर चढ़ता चला गया। ओह, उसने यह क्या कर दिया था ! वह रुपहली लोमड़ी, जिसे कोनकिची ने गोली चलाकर मार डाला था, उसकी माँ थी।

इतनी तेज़ भागने की वज़ह से उसकी टाँगें थककर काँपने लगी थीं। कोनकिची गिरी हुई पत्तियों के ढेर पर निढाल गिर पड़ा और फूट-फूट कर रोने लगा।

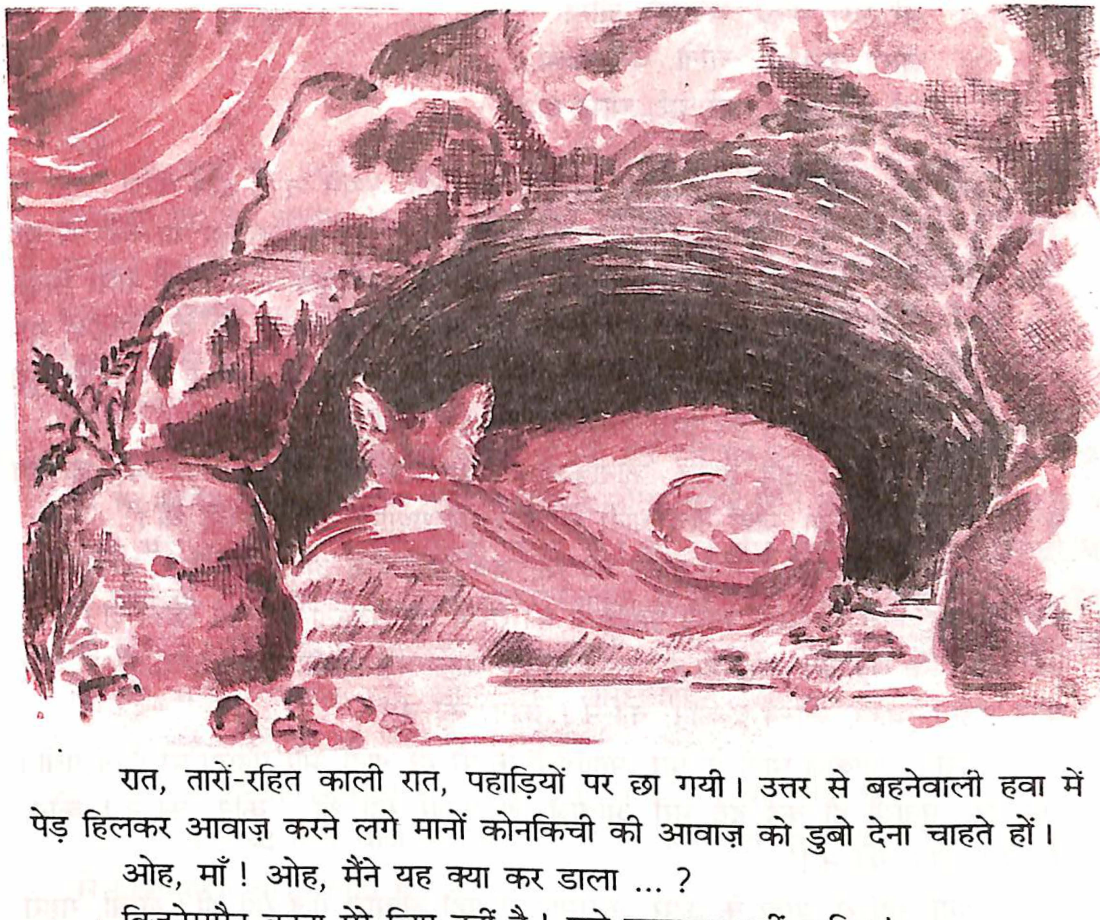

रात, तारों-रहित काली रात, पहाड़ियों पर छा गयी। उत्तर से बहनेवाली हवा में पेड़ हिलकर आवाज़ करने लगे मानों कोनकिची की आवाज़ को डुबो देना चाहते हों।

ओह, माँ ! ओह, मैंने यह क्या कर डाला ... ?

बिज़नेसमैन बनना मेरे लिए नहीं है ! मुझे तनख़्वाह नहीं चाहिए !

मुझे मेरी माँ वापिस दे दो। मेरी माँ को वापिस ला दो !

जैसे-जैसे कोनकिची की दर्द-भरी आवाज़ उसके दिल की निराशाजनक तह से निकलने लगी, वैसे-वैसे हवा भी तेज़ होती गयी। पत्तियों से निकलनेवाली साँय-साँय तथा पेड़ों की चीख़ भी अँधेरी रात के बीच बढ़ती गयी तथा पेंड़ों की टहनियाँ और बीज कोनकिची के फैले शरीर पर गिरते रहे।

चर्र मर्र, चीख़, चर्र मर्र, चीख़
लोगो, इन्सानो, चलो, घर जाओ...

115989
17.11.04
SHIMLA

चर्र मर्र, चीख़, चर्र मर्र चीख़
लोगो निकलो, इन्सानो निकलो।
चर्र मर्र, चीख, चर्र मर्र, चीख़
लोगो, इन्सानो, चलो, घर जाओ...
चर्र मर्र चीख़, चर्र मर्र, चीख़ लोगो ...

अन्ततः कोनीकिची ने अपना सिर उठाया और अपने चारों ओर देखा। रात के अँधेरे में उसे हर पेड़ की गाँठ और गुमटा लोमडों के चेहरे-सा लगता था और वे दर्द और यातना-भरे चेहरे ठीक उसी को देखते जान पड़ते थे। कोनकिची ने लम्बी साँस छोड़ी, "मैं दोबारा कभी लोमड़ नहीं बन सकता। अगर यह सम्भव भी हो तो ये पहाड़ियाँ मुझे अब यहाँ नहीं रहने देंगी। लगता है, आख़िरकार मैं इन्सान बन ही गया हूँ। अव से मुझे अपना जीवन एक इन्सान की तरह ही जीना है।"

फिर पैरों पर खड़े होकर, कोनकिची पहाड़ी के किनारे से नीचे की ओर डगमग क़दमों से उतरने लगा, जहाँ नीचे घाटी में शहर की रोशनियाँ चमक रही थीं।

सुबह की हल्की रोशनी फूटने को थी, जब कोनकिची अपने अपार्टमेंट पर पहुँचा। जैसे ही वह कमरे में घुसा, उसने पहाड़ियों की तरफ़ खुलनेवाली खिड़की खोल दी। फिर, बिना जाने कि वह क्या कर रहा है, उसने अपना चेहरा उन पहाड़ियों की ओर उठाया और बोल उठा। "कोन, को-न ! कोन, को-न ! कोन, को-न !"

उसकी आवाज़ घाटी के पार, पहाड़ियों के परे हर घाटी और पहाड़ी पर फैल गयी। फिर उसे सुनायी दी कई दर्द-भरी आवाज़ें जो पुकार रही थीं, "कोन, को-न ! कोन, को-न ! कोन, को-न !"

यहाँ-वहाँ से, शहर के ऊपर आसमान में यही आवाज़ गूँज रही थी। लम्बी, गहरी साँस भरकर कोनकिची दुनिया के कानों में फुसफुसाया, "ओह, हर एक आदमी, आप सभी ..." फिर धीरे-धीरे, चुपचाप उसने पहाड़ियों तथा उसके परे के संसार को दिखाने वाली खिड़की बन्द कर दी।

उसके बाद किसी ने कोनकिची को देखा और सुना नहीं। लेकिन आप सब, जब आप सुबह सूरज उगने से ठीक पहले अपनी खिड़की खोलें और ध्यान से सुनें तो आप दूर कहीं एक लोमड़ के रोने की आवाज़ सुन सकते हैं 'कोन, को-न ! को-न !'

वह आपके शहर का कोनकिची हो सकता है...

धरती, जहाँ हम रहते हैं, उससे बहुत दूर आकाश-गंगा के एक सुदूर किनारे पर एक छोटा-सा ग्रह था, जिसका नाम था अचरज। अंतरिक्ष के अँधेरे में अनगिनत ग्रहों के साथ अचरज ग्रह धीरे-धीरे घूमते हुए तैरता रहता था। इस ग्रह को सामान्य टेलिस्कोप से नहीं देखा जा सकता था। बेशक टेलिस्कोप का होना आवश्यक था, लेकिन अचरज ग्रह को देखने के लिए ज्यादा आवश्यक था एक शान्त और खुले दिमाग़ का होना। अब तुम सब अचरज ग्रह को अपने दिमाग़ की खुली आँख से देखने की कोशिश करो ...

आओ, सबसे पहले पता लगाते हैं कि इस तारे को अपना नाम कैसे मिला ? इस तारे पर रहनेवाले लोग हमेशा कुछ-न-कुछ अनोखा करते रहते थे और इस 'अचरज' की खुशी-भरी आवाज़ें साल-भर गूँजती रहती थीं। लेकिन उस ग्रह पर सबसे अनोखी बात थी वहाँ के लोगों के हाथ। कैसे आश्चर्यजनक थे वे ! जो कुछ भी एक व्यक्ति बनाने की सोचता, उसे ज़ल्दी ही उनके हाथ बना डालते। टेलिस्कोप, मुद्रा, डाक-टिकटें, साइकिल, बिस्कुट, घड़ी, चिमटियाँ और ओह, इतनी सारी चीज़ें !

उन्हें शब्दों से भी बड़ी हैरानी होती थी।

"ये शब्द जो विचार में ढल जाते हैं, बड़े काम की चीज़ होते हैं !"

"ये शब्द ऐसी चीजें भी बनाते हैं, जिन्हें हम देख नहीं सकते और हाथ विचारों से देखनेवाली चीज़ें बनाते हैं।"

लोगों के ऐसी अनोखी चीज़ें सालो-साल कहते और करते रहने के कारण इस ग्रह का नाम जल्दी ही 'सरप्राइज़' यानी अचरज पड़ गया। हमें धरती पर रहनेवालों को यह बेमतलब लगे लेकिन वहाँ तो सरप्राइज़ पर सारे दिन 'सरप्राइज़ ! सरप्राइज़' की आवाज़ें गूँजती रहती थीं।

बहुत ज़माने से अचरज ग्रह के लोग, हमारे चमचमाते हरे-भरे पृथ्वी ग्रह के प्रशंसक थे। पता नहीं किसने उन्हें पृथ्वी के बारे में बताया था, लेकिन फिर भी यह पृथ्वी ही थी जिसके बारे में वे किसी और चीज़ के मुक़ाबले में ज़्यादा बात करते थे। आख़िर पृथ्वी

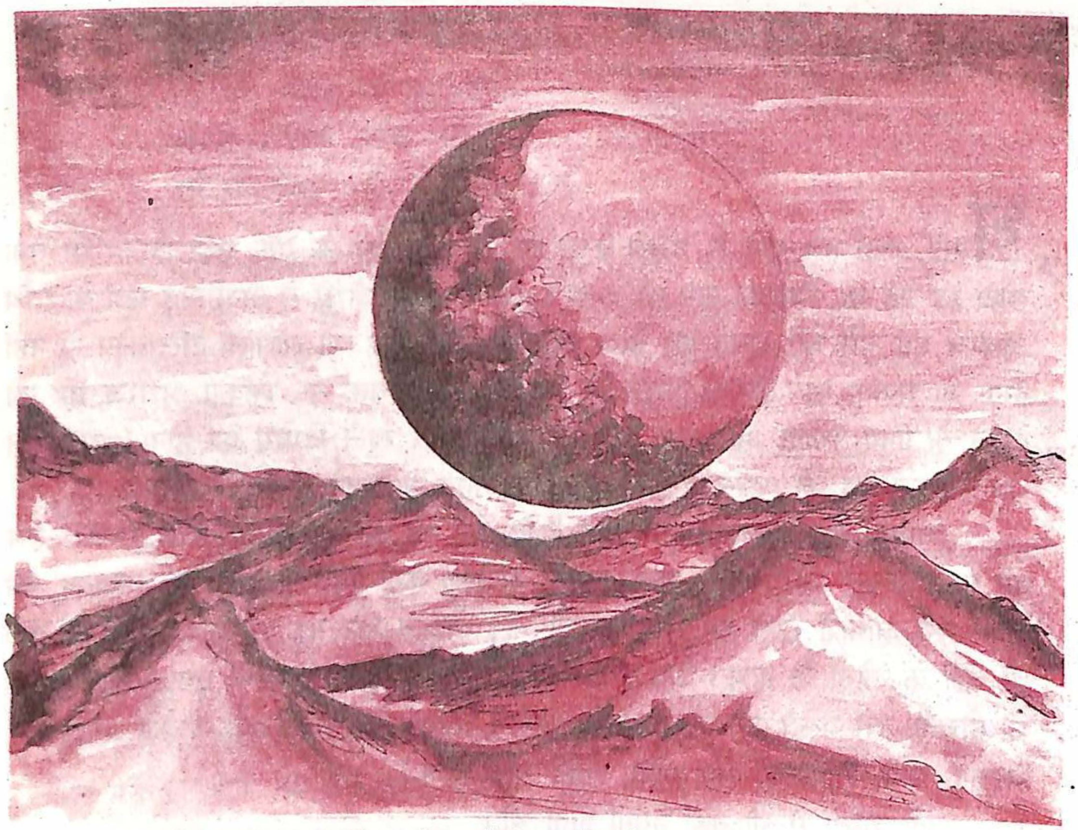

ही तो थी, जो 'सरप्राइज़' से इतने अनोखे तरीक़े से अलग थी। वहाँ सारा ग्रह सूखे मरुस्थल से ढका हुआ था। अंतरिक्ष में दूर-दूर तक फैले ग्रहों में सिर्फ़ पृथ्वी को ही इतने चमचम करते नीले पानी और जंगल की ताज़ी हवा का वरदान प्राप्त था।

यह कहा जाता है कि पृथ्वी ग्रह पर खगोल के सबसे अनोखे प्राणी रहते थे—इन्सान, पृथ्वी-निवासी। सबसे आश्चर्य की बात यह थी कि ये पृथ्वी-निवासी बड़े-बड़े काम कर सकते थे। वे अपने हाथों से आजीविका कमा सकते थे। यह इतने आश्चर्य की बात थी कि सारे खगोल में किसी को भी चकित कर सकती थी।

अचरज ग्रह पर लोग खुशी-खुशी, बिना किसी फ़िक्र के रहते थे और बिना बूढ़े हुए वे काफ़ी लम्बी उम्र तक ज़िन्दा रहते थे। फिर भी एक चीज़ ऐसी थी जिसके लिए उनकी इच्छा दूसरी सारी चीज़ों के मुक़ाबले में अत्यंत प्रबल थी—वह थी पृथ्वी के लोगों से मिल पाना।

दुर्भाग्यवश, उन सबकी यह महान इच्छा इतनी आसानी से पूरी होनेवाली नहीं थी। सबसे बड़ी समस्या थी कि उनके पास लाखों प्रकाश-वर्ष का फ़ासला तय करने के लिये कुछ भी नहीं था। इसलिए अचरज ग्रह पर हर एक—राजा, प्रजा, कुत्ते और बिल्लियाँ, यहाँ तक कि तिलचट्टे भी बेसब्री से उस दिन के इंतज़ार में थे, जब पृथ्वी से कोई ख़बर आयेगी।

हमारी धरती के कैलेंडर के अनुसार यह वर्ष 1991 के सितम्बर माह का उन्नीसवाँ दिन था। अचरज ग्रह के ऊपर का आसमान साफ़ और रोशनी भरा था। सिर्फ़ हमेशा की तरह कुछ सफ़ेद बादल इधर-उधर तैर रहे थे।

एकाएक पूर्व में आकाश से अत्यन्त आश्चर्यजनक रफ़्तार से उड़ता हुआ एक चमकीला, चाँदी के रंग वाला रॉकेट आया। इस अजीबो गरीब चीज़ को डॉ. इलैक्स ने अपनी वेधशाला में सबसे पहले देखा।

"अ ... रे ! सरप्राइज !" वह चिल्लाये और मुड़े तथा टेलीफ़ोन उठाकर जल्दी-जल्दी सूचना मंत्री का नम्बर मिलाया।

"क्या बात है, डॉ. इलैक्स ? बोलिये—कुछ और बताइये—जब तक आप अपनी आवाज़ पर नियंत्रण नहीं रखेंगे, मैं कुछ नहीं समझ सकता। जितनी ज़्यादा हैरानी की बात हो, उतने ही ध्यान से आपको बोलना चाहिए", सूचना मंत्री ने कहा।

"हाँ, वह चमकती हुई रुपहली चीज़ ... मेरा मतलब वह चमकीली चीज़ ..." डॉ. इलैक्स ने माथे से पसीना पोंछते हुए हकलाते हुए कहा, "जिस दिशा और गति से यह आयी है, उसे ध्यान में रखते हुए यह पक्की बात है कि यह राकेटनुमा चीज़ पृथ्वी का उपहार है। माननीय मंत्री जी, लगता है कि प्राचीन दन्तकथा का कथन सच हो रहा है।"

"बेशक, इस उड़नेवाली चीज़ की वर्तमान स्थिति क्या है ? यह बताओ कि आकाश में इतनी गति से चलनेवाली किसी चीज़ को कैसे पकड़ा जा सकता है ?"

"मिनिस्टर, सर, यह हमारी खुशकिस्मती है कि इस चीज़ ने अचरज ग्रह के गिर्द मण्डल में प्रवेश कर लिया है।"

सूचना मंत्री इतने अधिक उत्तेजित हो गये कि वह टेलीफ़ोन फेंक, लम्बे-चौड़े महल में चक्कर काटने लगे तथा जंगली बन्दर की तरह चिल्लाने लगे। फिर वह उत्तेजना से भरा लाल चेहरा लिए राजा के पास दौड़े गये। जब वह आवेश में यह ख़बर सुना रहे थे तो राजा के दरबार में उपस्थित कई नौकर इस आश्चर्य से इतने उत्तेजित हो उठे कि

एक-दूसरे पर गिरते-पड़ते वे मोटे, लाल, शाही ग़लीचे पर लोटने लगे। ओह, सचमुच बहुत ही लम्बे समय से वे पृथ्वी निवासियों से सम्पर्क के प्रबल इच्छुक थे।

लेकिन अचरज ग्रह के राजा अपने सूचना मंत्री तथा अन्य नागरिकों की तरह नहीं थे, क्योंकि अपने ग्रह पर रहनेवालों में वही सबसे अधिक शान्त और संयमित थे इसीलिये तो वह उनके राजा थे। वह चुपचाप बैठे अपने मंत्री जी की रिपोर्ट सुनते रहे, सिर्फ़ बीच-बीच में कभी-कभी सिर हिला देते थे। और कह उठते थे "आह, हा—"

राजा के निकट बैठे नौकरों को ध्यान रखना था कि वे उन्हें उत्तेजित न होने दें, इसीलिए उनकी आँखों पर छोटे-छोटे काले पर्दे टँगे हुए थे। उनके कानों में मुलायम रूई ठूँस दी गयी थी और उनके मुँह पर टेप की कई पट्टियाँ लगी हुई थीं, ताकि वह उसे पूरी तरह खोल न सकें। हालाँकि उनका दिमाग़ बन्द या ढका नहीं जा सकता था। ...

जब सूचना मंत्री ने अपनी रिपोर्ट ख़त्म की तो राजा ने रेडियो पर एक विशेष भाषण दिया—"अचरज ग्रह के निवासियो, वह दिन अन्ततः आ ही पहुँचा है, जिसका इतने दिनों से इन्तज़ार था। पृथ्वी की दन्तकथा के सच होने का समय आ गया है। पृथ्वी से आये इस उपहार को जो अब हमारे ग्रह के गिर्द घूम रहा है, किसी को पकड़ना होगा और ज़मीन पर उतारना होगा। मैं घोषणा करता हूँ कि जो भी इसे सफलतापूर्वक नीचे उतार लायेगा, उसे अचरज-ग्रह संचालन समिति का निदेशक नियुक्त कर दिया जायेगा।

अगले दिन तक अचरज ग्रह के लोगों ने मिलकर एक पतंग-अंतरिक्ष यान का निर्माण कर लिया था, जो ऊपर की ओर उठ रही वायु-तरंगों पर चढ़ता चला गया तथा रुपहले रॉकेट को पकड़ लिया गया। तुरन्त एक स्मारक की स्थापना की गयी जिस पर निम्न शब्द खोद दिये गये—

> *"अचरज ग्रह के निवासियों के संयुक्त प्रयत्नों से इस स्थान पर पृथ्वी ग्रह के उपहार को आश्चर्यजनक तेज़ी से उतार लिया गया। इसके सम्मान में इस ग्रह के सभी निवासियों को आज से अचरज ग्रह संचालन समिति का अवैतनिक निदेशक नियुक्त किया जाता है।"*

अगले दिन अचरज ग्रह के सभी लोग इस रॉकेटनुमा चीज़ को देखने के लिए वहाँ आये, जहाँ वह ज़मीन पर उतरा था। वे दिनों-दिन वहीं जमे रहे और इस महान आश्चर्य को देखकर सन्तोष प्राप्त करते रहे। चूँकि इतने सारे लोग एक ही जगह पर जमा थे इसलिए उस ग्रह का अपना संतुलन बिगड़ गया और वह घूमते हुए डगमगाने लगा।

दिन और रात अत्यधिक तेज़ी से आने और जाने लगे, लेकिन लोग इस नये आश्चर्य को देखने में इतने व्यस्त थे कि उन्हें इसका अहसास ही नहीं था।

एक साफ़ रात में जब आकाश-गंगा के सभी तारे ऊपर तेज़ी से चमक रहे थे, राजा उस ऊँचे मंच पर चढ़े, जिसे इस विशाल सभा-स्थल पर बनाया गया था। वह मुड़े और मंच के बीचोबीच रखी उस चमकदार वस्तु की ओर आदरपूर्वक सिर झुकाया, फिर अपना दायाँ हाथ उठाया और बोलना शुरू किया। इसे सारा जन-समुदाय पंसारी, साइकिल ठीक करनेवाले, विद्यार्थी, बूढ़े-बुजुर्ग और बेशक़, अचरज ग्रह की सारी जनता बहुत ही रुचि से सुन रही थी :

"प्राचीन काल से, हाँ प्राचीन काल से",—राजा पानी का घूँट भरने के लिए रुके—"हमारे अचरज ग्रह को पृथ्वी नामक ग्रह अत्यन्त प्रिय रहा है। आप सभी जानते हैं कि हम पृथ्वी का कितना आदर करते हैं और पृथ्वी-निवासियों से सम्पर्क के कितने इच्छुक रहे हैं।"

इस पर भीड़ ने हर्ष- ध्वनि की और ज़ोर-ज़ोर से तालियाँ बजायी। राजा ने आगे कहा, "पृथ्वी की ताज़ी, हरी-भरी चमक जहाँ सफ़ेद बादलों के नीचे नीले सागर चमचमाते हैं और जहाँ हरे-भरे जंगल जानवरों की विभिन्न जातियों से भरपूर हैं—यही हमारे खगोल में प्रचलित दन्तकथा है। हाँ, इस सारे लम्बे-चौड़े खगोल में पृथ्वी की आश्चर्यजनक सुन्दर प्रकृति का मुक़ाबला करनेवाला कोई स्थान नहीं है। वह अवश्य हमारे ग्रह से बहुत भिन्न होगी, जहाँ चारों ओर असीम तथा सूखा मरुस्थल ही फैला है, लेकिन पृथ्वी पर प्रकृति से भी अधिक आश्चर्यभरी एक और चीज़ है।"

इस पर राजा के साथ मिलकर अचरज ग्रह के लोग चिल्लाने लगे—

"वे ही लोग
पृथ्वी निवासी
खगोल के सभी निवासियों में
अपने हाथों से कमाल की चीज़ें बनानेवाले
जिनके विचारों में इतना विवेक है।"

जब यह गान सारे अचरज ग्रह में गूँज रहा था तो मंच के निकट खड़ी बड़ी-बड़ी आँखोंवाली एक छोटी-सी लड़की ने शर्माते हुए कहा—"महाराज, मैं पृथ्वी के निवासियों

के दिमाग़ के बारे में और अधिक जानना चाहती हूँ। यह दिमाग़ ही तो है जो हाथों को हिलाने की शक्ति प्रदान करता है और शब्दों का निर्माण करता है, क्यों ठीक है न ?"

"हाँ, बेशक़," राजा ने कहा, "हम अभी इस उपहार को खोलेंगे और इस आश्चर्य के साथ-साथ आनंद लेंगे कि इसमें क्या है ? मेरा ख़्याल है कि हमें आज यह सबूत मिल जायेगा कि पृथ्वी के निवासियों के चेहरे हमारे जैसे ही हैं और वे अपने शरीर और हाथों को उसी तरह हिलाते हैं जैसे हम। लेकिन वह दिमाग़ जो उन हाथों को हिलाता है हमारी कल्पना से भी भिन्न होगा। इसलिए, मैं इन्सान के दिमाग़ के बारे में बहुत कम जानता हूँ। तो आइये, हम सब इस उपहार का निरीक्षण करें जो पृथ्वी से आया है।"

राजा ने पास में पम्प और पाइप लेकर खड़े लोगों को इशारा किया। अगर वे न होते तो राजा के शरीर से छूट रहे पसीने से मंच के पास खड़ी लड़की बह गयी होती। फिर राजा ने अचरज ग्रह पर अब तक दिया दिया गया सबसे लम्बा और प्रभावशाली भाषण दिया, "मुझे यक़ीन है कि हम सब यही सोच रहे हैं कि हरे-भरे ग्रह के हमारे दोस्तों ने क्या उपहार भेजा है। इस चीज़ को यहाँ सभी के सामने खोला जाना चाहिए। तब मेरे ख़्याल से हम इस दिन की उत्तेजना में लम्बी-लम्बी साँसें भरकर कल से इस ग्रह के भविष्य की सँवारने में जुट जायेंगे। यह अचरज ग्रह ही तो हमारी सारी खुशी है।"

ज्यों ही उस भाषण के अन्तिम शब्द ख़त्म हुए, राजा ने अपना ताज भीड़ के ऊपर उछाल फेंका। फिर वह एक अच्छी जगह चुनकर बैठ गये, जहाँ से वह रुपहली वस्तु देख सकते थे।

"सामने आइये, अचरज-ग्रह के शाही सलाहकारो !"

तभी सफ़ेद वर्दी पहने चार आदमी आये। राजा के सामने आदर-भाव से झुके और चुपचाप मंच पर चढ़ आये। उनकी जेबें पेंचकस, छेनी और आरी-जैसे औजारों से भरीं थीं। चारों के पास मोटी-मोटी फाइलें थीं। वे बड़े ही समझदार लगते थे, लेकिन उत्तेजना के कारण उनमें से कोई भी अपनी टाँगों को काँपने से नहीं रोक पा रहा था।

-वे लोग विचार और विवेक से लबालब भरे थे कि वह उनके सिर से बाहर बहकर मंच पर तालाब बना रहे थे ! पोंछा लिए कई आदमी मंच को साफ़ रखने के लिए तैनात थे।

इन चार महान सलाहकारों ने पहले अपनी चीज़ों को बड़ा दिखानेवाले आवर्धक शीशे निकाले और अपने हाथों से ध्यानपूर्वक यहाँ-वहाँ छूते हुए। ऊपर से नीचे तक उस वस्तु का निरीक्षण किया। फिर उन्होंने आरी का प्रयोग किया, जिससे मंच पर चिनगारियाँ छूटने लगीं। कुछ मिनटों बाद उनकी आरियाँ किसी बहुत ही सख़्त चीज़ से जा टकरायीं

और वे काम रोक आपस में सलाह करने लगे और अपने नोट्स देखने लगे। फिर वे औजारों के साथ दुबारा जुट गये, काटते और छेदते हुए, जब तक कि एकाएक रॉकेट में एक गहरा छ़ेद न हो गया।

"ओह ! अरे ! आहा... !" ऐसी ही कई आवाज़ें भीड़ में से गूँजी।

किसे पता था कि अब क्या होगा ? रॉकेट में से धीरे-धीरे और बिना आवाज़ किये, एक चमचमाता सफ़ेद पाउडर बह निकला। राजा ने ही सबसे पहले इसे देखा। भागकर उन्होंने इस अज़ीबोगरीब पाउडर का थोड़ा-सा हिस्सा उठाया फिर लोगों को दिखाने के लिए अपनी जुड़ी हुई हथेलियों को गर्व से ऊपर उठाया।

उसी समय हवा के एक झोंके ने पाउडर को उठाकर वायुमण्डल में बिखेर दिया। थोड़ा-सा पाउडर राजा के चेहरे पर भी गिरा और तुरन्त—ओह... यह क्या !—एक ऊँची चीख़ के साथ वह मंच पर गिर पड़े।

यह सोचकर कि अत्यधिक उत्तेजना से राजा बेहोश हो गये हैं, तीन सलाहकारों ने जल्दी-से पाउडर इकट्ठा करके दर्शकों को दिखाना चाहा। लो, वे भी गिर पड़े—धम्म, धम्म, धम्म—एक के बाद एक।

"वाह !... ओह !" भीड़ में से आश्चर्यजनक आवाज़ें उठीं और वे सब मिलकर गाने लगे—

"इन्सान ! इन्सान ! इन्सान !
आकाश-गंगा के शासक।"

बचा हुआ एक सलाहकार ज़्यादा ज्ञानी तो नहीं था लेकिन उसमें विवेक बहुत था।

अचरज ग्रह पर दो तरह के सलाहकार थे—एक ज्ञानवाले, जिन्हें वैज्ञानिक कहते थे और दूसरे विवेकवाले, जिन्हें दार्शनिक कहते थे।

ये वैज्ञानिक बहुत-सी चीज़ों के बारे में जानते थे, जबकि दार्शनिकों को मालूम था कि ज्ञान को लोगों की ख़ुशी के लिए कैसे इस्तेमाल किया जा सकता है। अचरज ग्रह पर समाज को इन्हीं दो तरह के सलाहकारों के साथ-साथ काम करने से बनाया एवं बढ़ाया गया था। दुर्भाग्यवश उत्पन्न उत्तेजना की घड़ी में अन्य तीन सलाहकारों ने इस विवेकशील व्यक्ति की सलाह को अनदेखा कर दिया था, जब उसने कहा था कि वे हर क़दम उठाने से पहले शान्ति और ध्यान से काम करें।

जब अचरज ग्रह के लोग काफ़ी गहमागहमी से आपस में बातचीत कर रहे थे तो

यह विवेकशील व्यक्ति अकेला ही पता लगा रहा था कि राजा और उसके तीन सलाहकार अपने चेहरों पर दर्द का भाव लिये क्यों गिर पड़े थे ? वह धीरे-से अपना हाथ और फिर कान पहले आदमी और फिर दूसरे आदमी की छाती से लगाकर सुनते हुए उलझन में पड़ गया था कि जो आवाज़ दिल से हमेशा आती रहती थी, वह अब राजा और उसके तीनों सलाहकारों के शरीर से क्यों नहीं आ रही थी ? कैसे ... कैसे वह आवाज़ ग़ायब हो गयी थी ? अचरज ग्रह पर जहाँ कभी कोई बूढ़ा नहीं हुआ था, बीमार नहीं पड़ा था, या मरा नहीं था—यह सचमुच बहुत महत्त्वपूर्ण बात थी।

अपनी जेब से अत्याधुनिक आवर्धक शीशा निकालते हुए जिसमें ऐंड्रोमेडा के शुद्ध प्रकाश का प्रयोग होता था, चौथे सलाहकार ने उससे चमचमाते हुए पाउडर को देखा। इस अत्याधुनिक आवर्धक शीशे में अंतरिक्ष से आ रही विकिरण गति को मापने की क्षमता थी। ज्यों ही वह पाउडर के सम्पर्क में आया, मापक की सुई डायल के चारों ओर ज़ोर से दस बार घूम गयी, शीशे का ढक्कन टूट गया और सुई बाहर निकल कर मंच पर जा गिरी। मंच के निकट खड़े लोग अब फटी-फटी आँखों से शून्य में घूर रहे थे। उनमें साँस तक लेने की हिम्मत नहीं रही थी।

वह विवेकशील व्यक्ति टूटी हुई सुई तथा काँच के टुकड़े चुनता हुआ अपने आप ही धीरे-से कह रहा था, "यह सब क्या हो रहा है ? इस मापक का अपने आप फट पड़ना ... हमें इन यंत्रों को कठिन परिस्थितियों के लिए बनाना चाहिए, जो पृथ्वी वालों के दिमाग़ द्वारा निर्मित वस्तुओं को भी माप सकें। सुई में बिना टूटे सैकड़ों बार घूम सकने की क्षमता होनी चाहिए ...। हाँ, लेकिन पृथ्वी के निवासियों को हमें इतना भयावह उपहार भेजने की क्या आवश्यकता थी ?" यह कहकर वह भी मंच पर गिर पड़ा।

तब अचरज ग्रह के लोग जिन्होंने इससे पहले बुढ़ापा, बीमारी तथा मौत की परिकल्पना भी नहीं की थी स्वयं पर से संतुलन खो बैठे। वे दुविधा और आश्चर्य में चिल्लाने लगे।

वह जिज्ञासु लड़की जिसने पहले राजा से प्रश्न पूछा था, अपनी माँ के पास से हट गयी। वह मंच पर चढ़ी और उस अजीबोगरीब चीज़ के पास पहुँची।

"इन इन्सानों को हमें चकित करना अवश्य आता है। क्या यह उनका दिमाग़ ही है, जो उन्हें ऐसी आश्चर्यजनक वस्तुएँ बनाने में मदद करता है, जो हमारे राजा जैसे महान लोगों को भी ढेर कर सकता हैं ? मैं सोचती हूँ ... !"

लड़की वहाँ गयी, जहाँ पाँचों लोग पड़े थे। "अरे, कितना सुन्दर पाउडर है !" उसने थोड़ा-सा उठाया और अपने चेहरे पर मलने लगी। "सब लोग अब मेरा चेहरा

देखकर क्या सोचेंगे ...'' उसने स्वयं से कहा और घूमी। उसकी आँखों के सामने राजा का चेहरा था, चेहरा जो अब कई छोटे-छोटे काले दाग़ों के चलते फूलकर नीला पड़ गया था और जिस पर दाग़ फैलते जा रहे थे। इसी तरह चारों सलाहकारों के शरीर पर भी वह काले दाग़ों को उभरता और फैलता देख सकती थी। अफ़सोस, तभी उस लड़की ने देखा कि उसके अपने हाथों पर छोटे-छोटे काले दाग़ उभर आये थे। उसका शरीर काँपने लगा और फिर उसके लिए साँस लेना भी मुश्किल हो गया। दर्द और डर के साथ तड़पती हुई वह वहीं गिर पड़ी।

लड़की की माँ भागती हुई मंच पर आई और अपनी बेटी की ओर दौड़ी, उसके दिल की धड़कन महसूस करने के लिए।

''कुछ नहीं ... कुछ नहीं ... कुछ नहीं ... उसके दिल की धड़कन ... बिल्कुल ग़ायब है ! मेरी बेटी का दिल धड़कना बन्द हो गया है। ओह, मेरी बेटी को क्या हो गया है ?''

उसकी दर्द-भरी चीख़ भीड़ में फैल गयी। इसने अचरज ग्रह के हैरान लोगों की बातचीत को एकदम बंद करा दिया। एक भी आवाज़ नहीं, बिल्कुल भी नहीं— एकदम— चुप्पी।

लेकिन यह चुप्पी अधिक देर तक नहीं बनी रही, क्योंकि अचरज-ग्रह के लोग घबरा गये, दुविधा में पड़ गये। वह चमकता हुआ पाउडर हवा में लहराता हुआ उठा और फिर लोगों पर टूट पड़ा। हाँ, गुस्सैल मधुमक्खियों के झुण्ड की तरह और जल्दी ही वह सैकड़ों लोगों की आँखों, कानों और मुँह में भर गया। बदहवास लोग एक के बाद एक ढहने लगे और भीड़ बचने के लिए तितर-बित्तर हो गयी।

''पृथ्वी का पाउडर हमारा विनाश करने आया है !''

अचरज ग्रह के लोग डर से चिल्लाते हुए दूर भागने लगे—यहाँ से वहाँ, दिनों-दिन वे चक्कर काटते रहे। ज़हरीला सफ़ेद पाउडर बढ़कर सभी दिशाओं में फैलता रहा, और सम्पर्क में आनेवाली हर चीज़, पौधे, जानवर, मिट्टी, पानी तथा दूसरी जानदार चीज़ों को तहस-नहस करता रहा।

पहले तो लोगों ने गहरे गड्ढे खोदकर और ज़मीन के अन्दर छिपकर स्वयं को बचाने का यत्न किया लेकिन पाउडर ज़मीन के नीचे भी पहुँच जाता था। फिर उन्होंने अचरज ग्रह पर जो छोटा-सा सागर था, उसकी नावों में सुरक्षा पाने का प्रयत्न किया,

लेकिन सागर का पानी अजीब-से गहरे नीले रंग का हो गया। मरी हुई मछलियाँ अप सफ़ेद पेट ऊपर किये तैरती दिखायी देने लगीं।

अचरज ग्रह पर बचाव की कोई जगह न होने पर लोग तेज़ी से एक बड़ा पतंग अंतरिक्ष-यान बनाने लगे, ताकि अपने ग्रह पर बह रही अंतरिक्ष की हवाओं का फ़ायदा उठा सकें।

"हमें पतंग अंतरिक्ष-यान बनाना चाहिए। हम अंतरिक्ष हवाओं पर उठकर जल्दी ही अंतरिक्ष में बच निकलेंगे। शायद हमारी यात्रा काफ़ी लम्बी हो। चूँकि यान पर बहुत लोग होंगे इसलिए हमें ढेर-सारा भोजन साथ ले जाना होगा।"

बिना रुके दस दिन और दस रात काम करके, चिल्ला-चिल्ला और गा-गाकर तथा जल्दी मचाते-मचाते लोगों ने मिल-जुलकर एक विशाल पतंग अंतरिक्ष-यान का निर्माण कर ही लिया।

अचरज में बच गये सभी लोग उसमें चढ़ गये और वे उड़कर दूर निकल गये। जैसे ही पतंग अंतरिक्ष यान अचरज ग्रह के ऊपर उड़ा, नीचे की ज़मीन उस भयावह पाउडर से भर गयी और इसके साथ घिनौने दाग़ सभी जगह छा गये।

"हम बच गये ! लेकिन हमारे पतंग-यान पर इतने कम यात्री ... ? क्या बस यही बच रहे हैं अचरज ग्रह की जनता में से ?"

पतंग अंतरिक्ष-यान पर कुछ बच्चे भी थे। बड़ों की दुख-भरी आवाज़ों को, सुनते उन्होंने फटी आँखों से चुपचाप अपने ग्रह को, जो उनका घर था और अब नीचे अदृश्य होता जा रहा था, अलविदा कह दिया।

एक दार्शनिक ने लम्बी साँस ली और फिर शान्त स्वर में कहना शुरू किया— "प्यारे, नन्हें बच्चो, शायद हम अपने ग्रह—अचरज ग्रह—को दुबारा कभी नहीं देख पायेंगे। कोई नहीं जानता वह रुपहली चीज़ हमारे ग्रह पर क्यों आयी थी ? हमें उसे खोलने से पहले उसकी जाँच-परख करनी चाहिए थी। अब हमने जान लिया है कि हम इस खगोल की चीज़ों के बारे में उन्हें सिर्फ़ खोलकर ही नहीं जान सकते।"

एक नौजवान तुरन्त बोल उठा, "अब इस विशाल अंतरिक्ष में हम यहाँ से कहाँ जायेंगे ? यह तो हम जानते हैं कि हम दुबारा अचरज ग्रह पर नहीं रह पायेंगे, लेकिन वह ज़हरीला पाउडर तो धीरे-धीरे अंतरिक्ष में फैल रहा है। ओह, कहाँ से आयी वह रुपहले ...वाली चीज़ ?"

...थ्वी से ?" एक वैज्ञानिक ने कहा, "नहीं, किसी और ग्रह से नहीं। उसकी गति ... दिशा को ध्यान में रखा जाये तो यह चीज़ ज़रूर पृथ्वी से आयी होगी। लेकिन नहीं,

पृथ्वी के लोगों ने ऐसी घिनौनी चीज़ नहीं बनायी होगी। कोई भी इन्सान बूढ़ा-हुए बिना हमेशा के लिए ज़िन्दा नहीं रह सकता। हमारी तरह। अगर उन सभी को अपनी ज़िन्दगी के अन्त में मरना ही था तो वे ऐसी चीज़ क्यों बनाते? और अचरज ग्रह की पुरातन दन्तकथा शुरू होती थी "चमचमाते गर्म सूरज के नीचे ताज़ी, चमकीली हरी-भरी ... भला वहाँ किसी प्रकार का असन्तोष कैसे हो सकता है?"

क्षण-भर को सभी चुप रह गये। फिर वह विवेकशील व्यक्ति तीखी आवाज़ में बोला—"हमें इन्सानी जीव में इससे ज्यादा यक़ीन करना होगा। अगर खगोल में रहने वालों में, आपस में विश्वास नहीं रहेगा? किसी ने पहले कहा तो नहीं है लेकिन मैंने यह हैरत-भरा सच ढूँढ़ निकाला है कि खगोल का निर्माण एक दूसरे के बीच विश्वास के ताने-बाने से ही हुआ है।"

'क्या बकवास है!" एक युवक चिल्लाया। पसीने से भरी अपनी देह से जैकेट उतार फेंकते हुए एक गोल खिड़की में से चमकती हुई आकाश-गंगा की ओर इशारा करते हुए उसने कहा, "ख़ैर, हमें इन इन्सानों के बारे में पता लगाना चाहिये, पता लगाना चाहिये कि खगोल में क्या हो रहा है?"

इस पर पतंगयान में धमाचौकड़ी मच गयी—

"पृथ्वी पर रहनेवालों के बारे में पता लगाओ।
पृथ्वी पर रहनेवालों के बारे में पता लगाओ!
पृथ्वी के निवासी गहन रहस्य हैं
इस खगोल के।
हमारा हीरा है अचरज-ग्रह
हमारी खुशियों का गूढ़-मंत्र।"

जैसे-जैसे वे मिलकर ज़ोर से गा रहे थे, पतंगयान पृथ्वी ग्रह की ओर अग्रसर हो रहा था। आश्चर्यजनक गति से उड़ रहा था वह!

एकाएक—

"यह क्या? क्या?"

अंतरिक्ष में बहुत-से अज़नबी यान एक-दूसरे के आस-पास घूम रहे थे। फिर ज़िन्दा चीज़ों की तरह ही उन्होंने एक-दूसरे को मारने और पकड़ने के लिए अपनी धातुई बाँहें फैला लीं।

"क्या ये दूरस्थ संचालित युद्ध अंतरिक्ष यान हैं, जिनके बारे में हमने सुना है?" विवेकवान व्यक्ति ने बताया, "इनमें कोई इन्सान नहीं होता है, लेकिन मशीनें होती हैं, जिन्हें

कम्प्यूटर कहते हैं। यह मशीनों की लड़ाई है। मशहूर और बेहतर इन्सानी दिमाग़ इनमें नहीं होता।"

फिर उत्तेजित बच्चे चिल्लाने लगे, "आहा, वह रही पृथ्वी ! वह हरी-भरी चमक देखो !"

लेकिन यह क्या ? जैसे ही पतंगयान पृथ्वी के नज़दीक पहुँचा, उन्होंने देखा कि बड़े-बड़े कारख़ानों में से रॉकेट और कम्प्यूटरों के टूटे-फूटे टुकड़े बाहर निकलकर ऊपर अंतरिक्ष की ओर भागने लगे।

ये सारी चीज़ें पृथ्वी से आ रही हैं। क्यों ? किसलिए ? बच्चे चिल्लाये। धरती और सागर, गन्दगी और विकिरण-प्रसारण से इतने दूषित हो रहे हैं कि पृथ्वी के निवासियों के पास अंतरिक्ष में भाग जाने के सिवा और कोई चारा नहीं। तभी शीशे से बना एक बहुत बड़ा रॉकेट पतंगयान के पास से गुज़रा।

"इसे देखो !" अचरज का एक पंसारी चिल्लाया, "इस रॉकेट के सभी यात्री बूढ़े लोग हैं। हाँ, वे अपने बूढ़ों को फेंक रहे हैं। पृथ्वी पर क्या हो गया है ?"

विवेकवान व्यक्ति की आवाज़ दुःख से भारी हो गयी थी।

"यह पृथ्वी ग्रह नहीं है, क्योंकि एक ग्रह ऐसी हरकतें नहीं कर सकता। ये तो पृथ्वी के निवासी हैं। इन्सान ! ये चीज़ें उन्होंने अपने हाथों से ही बनायी हैं। ओह, मुझे मानना होगा कि मैं इन इन्सानों के बारे में कितना ग़लत रहा हूँ।"

अपने सामने इतने सारे रॉकेटों और कम्प्यूटरों के टुकड़े उड़ते देखकर, पतंग अंतरिक्षयान में बैठे अचरज ग्रह के लोग अब पृथ्वी-निवासियों को भिन्न दृष्टि से देखने लगे थे। ऊपर उठते रॉकेटों के नीचे वे एक साइनबोर्ड को देख सकते थे जिस पर लिखा था—'खतरनाक विकिरण कूड़ा-कर्कट निपटान।' वहाँ बहुत-से रॉकेट बनाये जा रहे थे—वैसे ही रॉकेट जैसा कि उनके ग्रह पर आया था.। कारख़ानों के बाहर उनका पहाड़-सा ढेर लगा था। उन्होंने देखा कि एक पाइप उन रॉकेटों में जुड़ा था जिसमें से एक सफ़ेद पाउडर उनमें जा रहा था।

"यही हैं पृथ्वी-निवासी। ये ही हैं इन्सानी हाथ, जो इतने अधिक व्यस्त हैं और यह शोर, यह इन्सानी आवाज़ों में इन्सानी शोर की गूँज।" विवेकवान व्यक्ति को कँपकँपी छूट गयी। फिर वह ज़ोर से बोला—

"ओह, हमारा अचरज ग्रह इन्सानों द्वारा बनायी गयी इस संस्कृति के तमाशे में लग गया है। इस सबका मतलब क्या है ? वह चीज़ जो हमारे ग्रह पर आयी थी, वह उपहार नहीं थी। हमारे पास जो आयी थी, वह मौत की राख थी। वह पाउडर, जो ज़िन्दा

चीज़ को मार देता है। अब पृथ्वी पर कोई जगह ऐसी नहीं बची, जहाँ वे उस राख को दफ़ना सकते थे। लेकिन तो भी उन्होंने क्यों ...''

हमें इनसे दूर रहना चाहिए, अंतरिक्ष के विशाल सागर के पार। इन्सानी जीवों से दूर, उन चीज़ों से भी दूर—जिन्हें इनके हाथ बनाते हैं।''

पतंग अंतरिक्ष-यान, आकाश-गंगा से परे वापस उड़ने की राह पर निकल पड़ा। जैसे ही वे पृथ्वी की कक्षा से बाहर निकल रहे थे—

''शानदार पृथ्वी की दन्तकथा के आख़िरी दिन के दर्शन कर लो। उसके नीले आकाश के नीचे चमकती वह बिजली और वे अज़ीबोगरीब बादल—लेकिन वे प्रकृति द्वारा बनाये गये बिजली और बादल नहीं हैं।''

जैसे ही वह छोटा-सा बादल एक भीमकाय खुम्बीनुमा बादल में बदल गया, वहाँ कई और छोटे-छोटे खुम्बीनुमा बादल दिखायी देने लगे। हर एक यान-यात्री एक बड़े टेलिस्कोप की ओर दौड़ा।

हरी-भरी पृथ्वी एक क्षण में भूरे रंग की हो गयी थी और जल्दी ही लाल लपटों से ढक गयी थी।

पतंग अंतरिक्ष-यान के पृथ्वी से दूर जाते-जाते, पृथ्वी का रंग लाल से जामुनी हो गया था। जल्दी ही वह काला पड़ गया और आख़िरकार वह अंतरिक्ष के एकांत अँधेरे में खो गया।

''अलविदा, पृथ्वी के निवासियो, सारे खगोल में तुम जैसी आश्चर्यजनक सजीव चीज़ कोई दूसरी नहीं है। अंतरिक्ष की कोई सीमा नहीं है लेकिन लगता है पृथ्वी-निवासियों की दुनिया का अन्त हो गया है। पृथ्वी के निवासियों की संस्कृति प्रगति करते करते इतनी जल्दी बदल गयी है कि खगोल में हममें से बहुतों ने इस पर उम्मीदें लगा रखी हैं। हज़ारों सालों की तरक़्क़ी और मेहनत के बाद ऐसी संस्कृति का निर्माण करना जो अपने बनानेवालों का ही विनाश कर दे ... फिर तो सारी तरक़्क़ी बेकार साबित होगी—एक झूठी कामयाबी ! ओह, इन्सानो ! अपने हाथों से बनायी गयी चीज़ों से भी ज्यादा हैरतअंगेज़ तो तुम खुद ही थे।''

विवेकवान व्यक्ति अपने सभी साथियों की ओर मुड़ा और धीरे-से बोला, ''इस विशाल अंतरिक्ष में कोई ऐसा स्थान, जिसे हम नहीं जानते ऐसा तो होगा, कोई ग्रह तो होगा, जहाँ सच्चे शब्द बोले जाते होंगे, जहाँ हर चीज़ कोमल और कुशल हाथों से बनायी जाती होगी। उम्मीद रखो। आशा अपने आपमें महत्त्वपूर्ण शब्द है, ज़िन्दा जीवों के लिए, विशेषकर तुम नौजवानों के लिए। अगर तुम्हें कोई आशा नहीं नज़र आती तो यह तुम

पर निर्भर करता है कि तुम आशा का निर्माण करो। हमारे लिए अचरज-ग्रह से भी ज्यादा ज़रूरी-चीज़ है—आशा।''

अचरज ग्रह के लोग उड़ते रहे, उड़ते रहे, एक नये ग्रह की खोज में। किसी को पता नहीं कि वे अब अंतरिक्ष के किस हिस्से में सफ़र कर रहे हैं या वे कहीं उतर गये हैं।

अंतरिक्ष के शान्त अँधेरे में, अनगिनत तारे अब भी चमक रहे हैं, आँख-मिचौनी खेलते हुए जैसे कि उन्हें अचरज ग्रह की त्रासदी के बारे में कुछ पता ही न हो।

कोई

जब कोई श्वास छोड़ता, गर्म हवा का भभका बाहर फेंकता, कहीं कोई दरवाज़ा धीरे-से खुल जाता, बेरोक-टोक और बे-आवाज़।

वह द्वार बड़ा ही कोमल लगता था और इतना हल्का जैसे पंखों से भरा गद्दा। सचमुच, हालाँकि द्वार बर्फ़ के मोटे टुकड़े से बना हुआ था और उसमें से सफ़ेद भाप के बादल बाहर निकल रहे थे।

विशाल द्वार के परे एक बहुत बड़ा कमरा था, जिसमें छत से हज़ारों हिमलम्ब लटक रहे थे। हमेशा की तरह नार्थ विंड शोर करता कमरे में घूम रहा था, उसका लम्बा चोगा उसके पीछे उड़ रहा था।

कमरे के बीचोबीच जनरल विंटर विराजमान था। वह अपने दायें हाथ नॉर्थ विंड, स्नो स्पिरिट, ओल्ड मैन फ्रॉस्ट, आइस जॉयट तथा अन्य कर्मियों को एक के बाद एक आदेश दे रहा था। जनरल विंटर की सफ़ेद वर्दीवाली छाती पर कई बड़े तमगे लटक रहे थे और कंधे पर सुनहरी लेस चमक रही थी। उसकी शानदार दाढ़ी, जो कई मीटर लम्बी थीं, तुषार से इस क़दर ढकी हुई थी कि एकदम सफ़ेद झिलमिला रही थी। उसके हाथ में बर्फ़ की तेज धारवाली एक बड़ी तलवार थी, जिससे वह शीत-संसार को अपने नियंत्रण में रखता था।

लेकिन ऐसा लगता था कि पिछले दिनों जनरल विंटर ने अप्रत्याशित कारणों से आदेश देना बन्द कर दिया था, क्योंकि अब वह ऊँवता रहता था और उसका सिर धीरे-धीरे ऊपर-नीचे होता रहता था। इसलिए उसके कर्मी भी अपने काम पर ध्यान नहीं देते थे।

ठीक ऐसे ही समय में किसी ने फिर एक बार एक साँस छोड़ी, जिसने धीरे-से मोटे बर्फ़ का द्वार ठेल दिया और धूप की एक किरण जो मानो मौक़े की तलाश में थी, कमरे में दाख़िल हो गयी। एक बार अन्दर प्रवेश पा जाने पर सूर्य की किरण तेज़ी से और अधिक प्रखर रूप में चमकने लगी, बर्फ़ीले कमरे के कोनों मे जा पहुँची और अन्त में उसने ऊँघते जनरल विंटर की नाक और सिर को छू लिया।

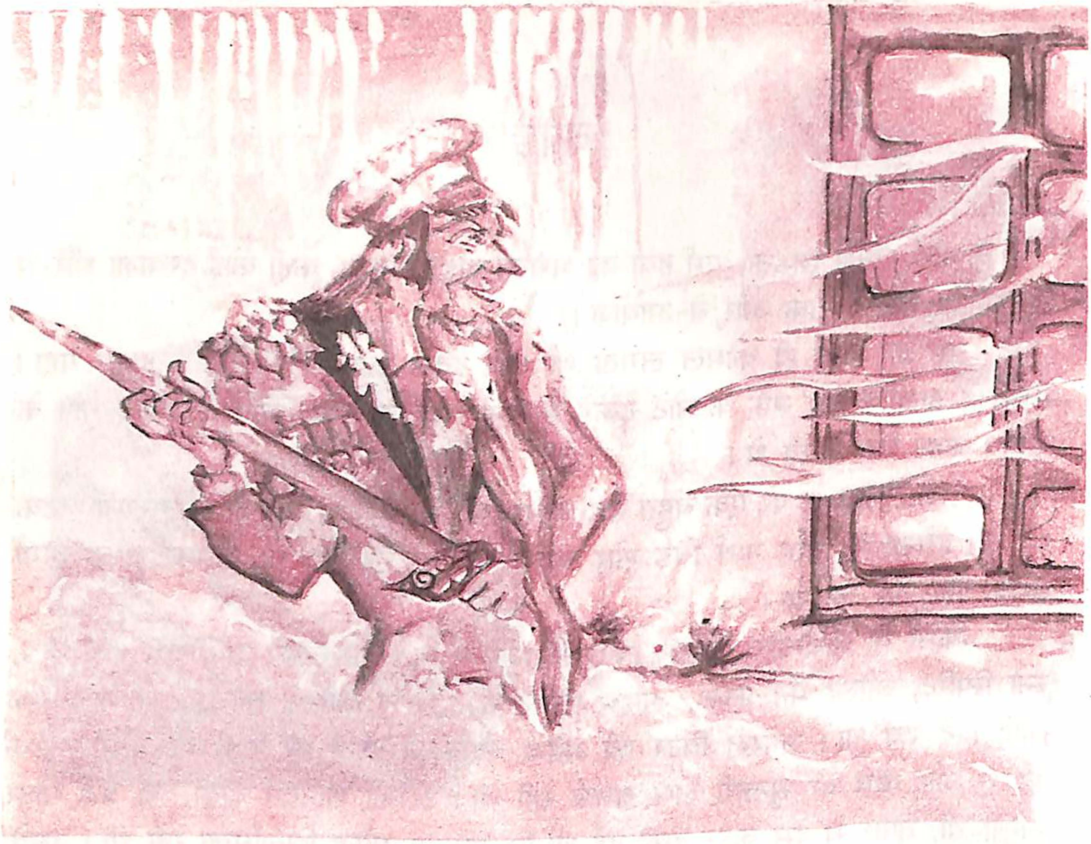

बूढ़े जनरल विंटर के सिर ने एकाएक हिलना-डुलना बन्द कर दिया। वह कूदकर उठा और एकाएक अपनी तलवार खींचकर अपने कर्मियों पर चिल्लाया, ''अरे निकम्मे गधो, कितनी बार मैंने तुम्हें कहा है कि इसको कमरे में मत घुसने दो! सैकड़ों हज़ारों सालों से मैं उसे बाहर रखने के लिए लड़ता रहा हूँ, लेकिन तुम बेवकूफ़ लोग हमेशा अपनी मुस्तैदी में चूक जाते हो, ठीक उस समय, जब हम उस पर हावी होने को होते हैं। ओह, बहुत ही बेशर्म है यह! चुपके-से घुस जाती है उस बूढ़े सोल यानी सूरज को साथ लिये और हमें सुलाने के लिए अपना नींद का पाउडर बिखेरने लगती है।

''ख़ैर, इस साल अब लड़ने के लिए बहुत देर हो चुकी है, क्योंकि बूढ़ा सोल हमारे क़िले के हर हिस्से और कोने में पहुँच चुका है। नार्थ विंड बहुत हो चुका। इस साल के लिये छोड़ो। ओह, लेकिन यह अन्त नहीं है। जल्दी भागो और अगले साल की लड़ाई की तैयारी करो। ठीक है, सभी पीछे हटने के लिए तैयार हो जायें। जल्दी, तुरन्त!''

कर्मी हटने की तैयारी में जुट गये, जनरल विंटर की सुन्दर सफ़ेद वर्दी को बर्फ़ के एक बड़े बक्से में बन्द कर दिया, छत से हिमलम्बों को उतारकर बंडलों में बाँधा, बर्फ़ के गोले बना दिये और उन्हें अपने मुँह में ठूँस लिया। नॉर्थ विंड, जो अभी लड़ना चाहता था, चेहरे पर कटु भाव लिये अपनी सफ़ेद टोपी उतारकर तहाने लगा।

जैसे-जैसे धूप ने उस विशाल कमरे में तुषार और बर्फ़ को पिघलाया, गर्म हवा की चमकती लहरें आ पहुँचीं और नाचती हुईं अपने विशेष तरीक़े से गाने लगीं। वे क्या कह रही थीं यह तो कोई नहीं बता सकता था लेकिन हिलते-डुलते हुए, हल्के-से ऊपर उड़ते हुए वे चुपचाप और अपने आप हँस रही थीं।

दूर, पहाड़ जो क्षितिज तक फैले थे, राहत महसूस करने लगे और ख़ुशी-से किसी खुशग़वार चीज़ का इन्तज़ार करने लगे। झरने, जो सर्दी-भर जमे रहे थे और बह नहीं सके थे—एक बार फिर सागर की ओर दौड़ पड़े, ख़ुशी से किलकारियाँ भरते हुए। मीनिका और छोटी-छोटी मछलियाँ, जो झरनों में चट्टानों के नीचे सोयी पड़ी थीं, जाग उठीं, पहले सिर्फ़ अपनी आँखों को और फिर पूँछ को हिलाती हुईं। दूर आसमान से, सागरों पर सफ़ेद बादल लहराने लगे जो अपने साथ गर्म हवा के झोंके भी लाये। पुरानी मिल का चक्का चरमराया और फिर खुशी से घूमने लगा और गाँववालों के चेहरे किसी नयी खुशी से खिल उठे।

वसन्त का समय था जब हर चीज़ तेज़ी से हिलने-डुलने तथा बदलने लगती है। लेकिन ज़रा ध्यान से देखो—ज़मीन के अन्दर जहाँ सूर्य की किरणें नहीं पहुँच सकतीं, कई आलसी लोग अभी भी सोये थे और खर्राटे भर रहे थे।

हालाँकि वह अपनी किरणें वहाँ नहीं भेज सकता था, जहाँ वे पड़े थे, फिर भी सोल यानी सूर्य ने कोमल आवाज़ में कुछ कहा, जो ज़मीन के अन्दर आराम फ़रमा रहे उन आलसियों तक पहुँच गया।

"अरे, देखो बहार का मौसम आ गया है। देखो, कितना खुशग़वार हो गया है। देखो, सभी काम पर जुट गये हैं, उनके माथों पर पसीने की रुपहली बूँदें चमकने लगी हैं ? अब बाहर निकल आना सुरक्षित है, क्योंकि जनरल विंटर जा चुका है। आओ, अब काली, अँधेरी धरती से बाहर की तेज़ रोशनी में बाहर आ जाओ।"

सूरज के चुप होते ही, यहाँ-वहाँ धरती धीरे-धीरे ऊपर उठने लगी और घास तथा दूसरे पौधों की कोंपलें बाहर झाँकने लगीं। चीटियों, साँपों और छिपकलियों ने तेज़ रोशनी

में जल्दी-जल्दी आँखें मिचमिचाते हुए सिर बाहर निकाले और ऊपर गर्म सूरज की ओर खुशी से देखते हुए अपने-अपने काम में जुट गये।

जब बहार की फ़िजाँ में यह सब कुछ हो रहा था तो दो दोस्त डैन्डेलियन तानपापो तथा बटरबर की काली फ़ुकी-नो-टु अभी भी ज़मीन के भीतर ही थे और उनींदी आवाज़ों में बातचीत कर रहे थे।

"आह, तानपापो, बसन्त का मौसम है। यह जिसे हम बहार कहते हैं, क्या चीज़ है ? बेशक, यह बहुत ही चमचमाती चीज़ है, दमकती है, लेकिन यहाँ ज़मीन के भीतर, जहाँ हम इतनी देर से हैं, रहना काफ़ी आसान है। वहाँ, ऊपर तो ज़िन्दगी मुश्किलों से भरी होगी।"

"तुम बिल्कुल ठीक कहते हो," डैन्डैलियन ने कहा, "यहाँ ज़मीन के नीचे कितना आराम है। हालाँकि सूरज वहाँ ऊपर के जीवन के बारे में इतना अच्छा कह रहा था, लेकिन हमें वहीं रहना चाहिये, जहाँ हम खुश हैं। अगर मैं ऊपर जाऊँगी तो मेरे शरीर पर पत्तियाँ उग आयेंगी और सिर पर एक फूल, लेकिन मुझे एक मिनट भी चैन नहीं मिलेगा। और फिर जब मेरा फूल बीजों में बदल जायेगा तो उन बीजों को हवा उड़ाकर ले जायेगी, दूर जाने कहाँ ! मेरा ख़्याल है मैं यहाँ बहुत खुश हूँ। यहाँ मुझे बिल्कुल भी हिलना-डुलना नहीं पड़ता है।"

जब डैन्डेलियन और बटरबर इस तरह आपस में बातचीत कर रहे थे तो ऊपर ज़मीन से ख़ुशी-भरी आवाज़ें आ रही थीं। खुशी ऐसी कि जैसे कोई त्यौहार मनाया जा रहा हो। पौधों की हँसी और बातचीत की आवाज़ें, जिन पर जवान कलियाँ और फूल उग रहे थे और उन जानवरों की आवाज़ें जो उत्तरी हवा के झोंके द्वारा टूटे-फूटे मकानों की मरम्मत कर रहे थे—ये आवाज़ें किसी भी दिल को हल्का और ख़ुश करने के लिये काफ़ी थीं। नीचे जमीन में दोनों दोस्तों ने इन आवाजों को सुना और उन्हें ख़ुशी और दुख की मिली-जुली भावना का अहसास हुआ।

"ओह, तानपापो, मेरी दोस्त, क्यों न हम एक सेकेंड के लिए अपने सिर बाहर निकालें यह देखने के लिये कि आसपास क्या हो रहा है ? जहाँ तक मेरा सवाल है ज्यों ही मैं बढ़ना शुरू करता हूँ, लोग आकर मुझे तोड़ने लगते हैं बटरबर सूप बनाने के लिए या बटरबर का अचार डालने के लिए। लेकिन फिर भी मैं जानना चाहता हूँ कि ऊपर क्या हो रहा है।"

"ऊँह, मेरा ख़्याल है फुकी-नो-टु, मैं भी बाहर चलूँ। मैं बहार का नज़ारा देखने

के लिए बेताब हूँ ... लेकिन एक ज़ल्दीवाला नज़ारा, ठीक ?''

इस तरह डैन्डैलियन और बटरबर ने एक लम्बी साँस खींची और अपने सिरों से ऊपर की ओर धक्का दिया। उनके ऊपर ज़मीन में दो छोटे-से उभार बन गये और दो छोटे छिद्रों ने आकाश की ओर मुँह खोला और दोनों दोस्त बाहर आ गये। जैसे ही तानपापो और फुकी-नो-टु ने अपने सिर बाहर निकाले तेज़ रोशनी में उनकी आँखें तेज़ी से मिचमिचाने लगीं और सूरज उनके ऊपर प्यार से मुस्कराया।

''तानपापो और फुकी-नो-टु, मुझे तुम्हें देखकर बड़ी खुशी हुई है। हम तो इन्तज़ार कर ही रहे थे, सोच रहे थे कि कब तुम बाहर आओगे। तो अब, अपनी उनींदी आँखों को खोलो और चारों ओर देखो।''

''ओह, कितनी रोशनी है !'' फुक़ी-नो-टु दोनों हाथ से अपनी आँखें ढकते हुए चिल्लाया, ''यहाँ ज़मीन के ऊपर रोशनी चकाचौंध कर रही है। मेरी तो आँखें ही ख़राब हो जायेंगी। और ये अलग-अलग आवाज़ें ! नीचे कितना अँधेरा और शान्ति थी। ... आह, लेकिन ऊपर कितनी प्यारी हवा है ... लेकिन, तानपापो, अब हम क्या करें ? हम तो सिर्फ़ एक ज़ल्दी का नज़ारा देखना चाहते थे...''

जब आख़िर में आँखें रोशनी में सध गयीं तो बटरबर ने अनिश्चित भाव से चारों ओर देखा। वसन्त की नीम-गर्म हवा चुपचाप इधर-उधर अपने काम में लगी थी, पेड़ों और घास के लम्बे-चौड़े मैदानों में पत्तियाँ और फूल खिला रही थीं। अपनी लम्बी नींद से लाल आँखें लिए साँप और मेढक इधर-उधर घूम रहे थे। महीनों न खा सकने के कारण एक भूखा भालू पहाड़ी के साथ झाड़ियों में घूम रहा था।

तानपापो ने ख़ुशी से अपने चारों ओर चीज़ों को देखा और फिर विश्वास-भरे लहज़े में कहा—''फुकी नो-टु, यह सच है कि नीचे ज़िंदगी आसान थी लेकिन वह इसलिए कि हम वहाँ सिर्फ़ सो ही रहे थे। इस तरह सोते हुए हम न कुछ देख रहे थे, न कुछ सुन रहे थे, न कुछ सूँघ रहे थे और न ही कुछ महसूस कर रहे थे। लेकिन यह कोई जीना नहीं है, क्यों ? सचमुच बाहर निकलकर लम्बी साँस लेने, स्वर्ग की ओर निहारने और धीरे-धीरे बढ़ने में कितना मजा है।''

''लेकिन'', फुकी-नो-टु ने टोका, ''याद रखो, जब तुम बड़ी हो जाओगी और बीज बनेंगे तो हवा आकर उन्हें बिखरा देगी। मेरे लिए तो और भी बुरी बात है। मैं तो जल्दी ही किसी इन्सान द्वारा खा लिया जाऊँगा। जब तुम्हें हवा अपने साथ नचाते हुए कहीं ले जा रही होगी, मैं तब तक किसी के पेट में पहुँच चुका होऊँगा।''

"तुम कह रहे हो कि तुम स्वर्ग की ओर मुँह किये बढ़ने लगोगे, लेकिन क्या तुम्हें सचमुच मालूम है कि स्वर्ग किस ओर है ? हम तो बढ़ने के सिवा कुछ नहीं कर सकते और जितनी जल्दी हम बढ़ेंगे, उतनी जल्दी हम मरेंगे। लेकिन मुझे मौत से कुछ नहीं लेना-देना।"

तानपापो सिर झुकाये सोचती रही, फिर अपने मित्र को जवाब दिया, "ख़ैर यह तो सच है। मेरा ख़्याल है जल्दी बढ़ने से बुढ़ापा आता है और फिर मौत। आह, लेकिन मैं फिर भी बढ़ने का लोभ संवरण नहीं कर सकती। फूल खिलाना। फिर छोटे-छोटे बीज और फिर उन बीजों से नन्हे-नन्हे पौधे—वसन्त की रोशनी की ओर देखना और बढ़ना, इस विचार से ही दिल उछलने लगता है।"

"और .. " डैन्डोलियन ने झिझकते हुए कहा, "स्वर्ग उसी ओर होगा, जहाँ तेजस्वी सूर्य चमकता है, आकाश के सिरे के पार। वह देखो, खेत के ऊपर लवा परिन्दा उड़ रहा है न, आसमान में ऊँचा उठता हुआ ? मेरा ख़याल है मेरी तरह वह भी मानता है ..."

"ख़ैर छोड़ो" फुकी-नो-टु ने कहा, "मुझे अफ़सोस है लेकिन मैं यहाँ रहकर बढ़ना नहीं चाहता। मुझे मरने की चाह नहीं है। मैं तो ज़मीन के अन्दर रहकर सोना चाहूँगा, हमेशा के लिए।" बटरबर फिर झुका और दोनों हाथों से निराशा-भरे तरीक़े से नीचे जाने के लिये खुदाई करने लगा। लेकिन उसने पाया कि ज़मीन सख़्त हो गयी थी और उसे अन्दर नहीं जाने दे रही थी। साथ ही ज़मीन ने गुस्से में कहा—

"फुकी-नो-टु, तुम्हें क्या हो गया है ? इतने डरपोक मत बनो। अपना सिर बाहर खुली हवा में निकालने के बाद कोई भी वापस ज़मीन के अन्दर जाने की नहीं सोचता। जीते-जागते संसार में आ जाने के बाद अँधेरी दुनिया में वापस जाने की सोचना सरासर बेवकूफ़ी है।"

ज़मीन ने और कुछ नहीं कहा लेकिन एकाएक फुकी-नो-टु के चारों ओर जमीन पर तख़्तियाँ उभर आई जिन पर लिखा था, 'अंदर न आयें' और 'प्रवेश निषेध'। दुखी बटरबर के लिए यह असहनीय था, इसलिए वह रोने लगा। फिर तानपापो की जानी-पहचानी और मीठी आवाज़ उसके कानों तक पहुँची, "फुकी-नो-टु ! हमें वापस नीचे वहाँ जाने का विचार छोड़ देना चाहिये। वैसे भी अब हम जग गये हैं तो हम लम्बी नींद में वापस क्यों जायें ? जाने क्यों मुझे वह यहाँ किस्मत आज़माने से ज्यादा डरावना जान मालूम पड़ता है। ओह, फुकी-नो-टु, मुझे भी खाये जाने और मरने से डर लगता है लेकिन ऐसा तो सभी के साथ होता है। आखिर सोये रहने और मरने में फ़र्क़ ही क्या है ? अगर हम

बाहर इस दुनिया में रहें, धीरे-धीरे बढ़ते हुए, तो हम अपने आस-पास बहुत-सी चीज़ें देख सकते हैं और शायद हवा और पानी पर सवारी करते हुए सैर करने का मौका भी मिल जाये। ज़मीन के नीचे सोये रहने पर हम अपने नन्हें दिमाग़ों में समायी सपनों की छोटी-सी दुनिया ही तो देख सकते हैं। मेरे दोस्त, हमें बढ़ते रहने का निश्चय कर लेना चाहिये, थोड़ा-थोड़ा, उस मेहरबान, गर्मजोश सूरज की ओर।''

बाँहें बाँधे, यह सब कुछ सुनते हुए फ़ुकी-नो-टु ने धीरे-धीरे अपना सिर हिलाया।

''हाँ, यही ठीक है ! सिर्फ़ सोये रहना तो मरने के बराबर होगा। अब जब हम जग ही गये हैं तो हमें काम पर जुट जाना चाहिये, गर्म रोशनी में बढ़ते रहना चाहिए। देखो, देखो, मैं तो जाने क्यों अभी से खुद को ताक़तवर महसूस कर रहा हूँ !''

''हाँ. हाँ !'' तानपापो ने खुशी से मुस्कराते हुए उत्तर दिया।

तानपापो और फ़ुकी-नो-टु गाते और नाचते हुए अपने सिरों से मिट्टी और रेत हटाकर बढ़ने लगे। सूरज ने इस दृश्य पर दृष्टि डाली और मुस्कराया। दूर एक हरी-भरी

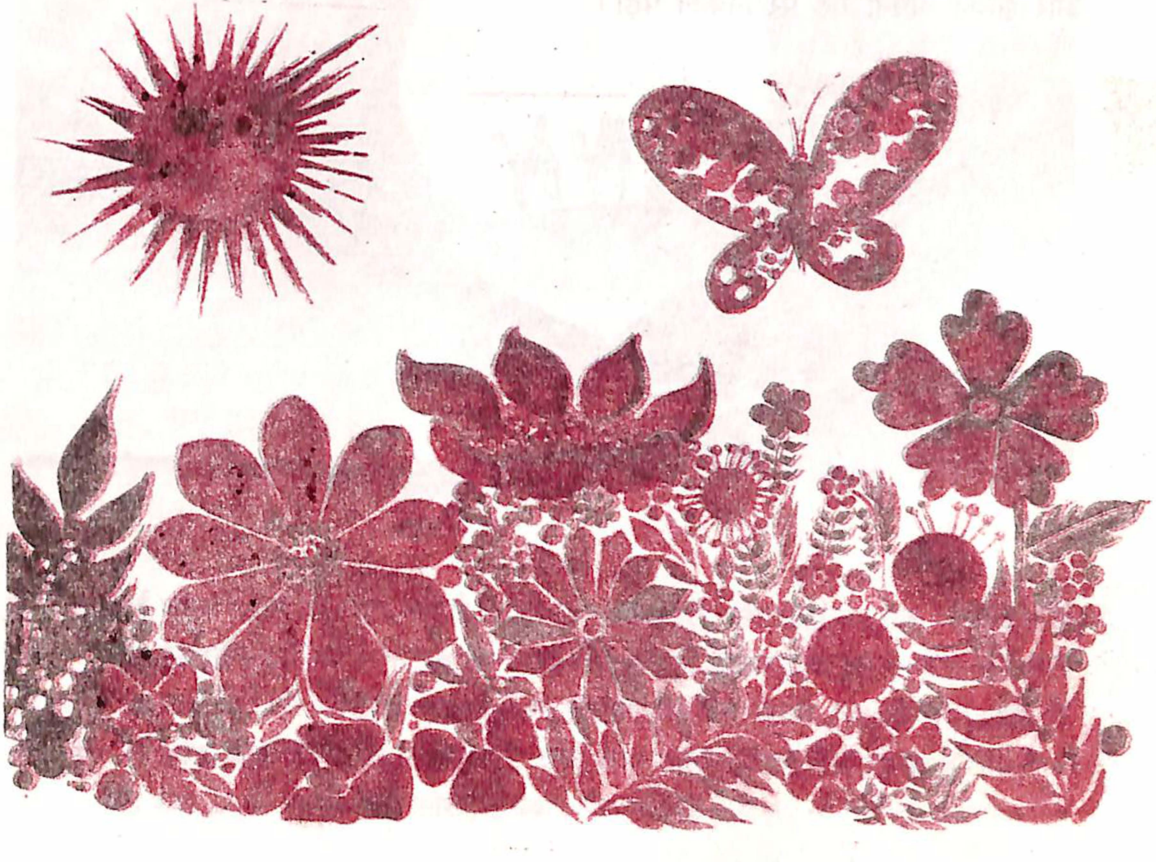

पर्वतमाला से एक बड़ा-सा सफ़ेद बादल इन दो मित्रों की ओर उड़ चला। उनके ठीक सिरों के ऊपर बादल आराम करने को रुका और जैसे ही और अधिक उत्साह से वे बढ़ने लगे, उनकी खुशी-भरी आवाज़ तराने में बदल गयी। तब उन्होंने अपने चेहरे सूरज की ओर घुमाये और पल-भर को बन्द करके उसे आँख मार दी।

ठीक उसी समय वसन्त की वर्षा की दो ख़ुशगवार बूँदें गिरीं और उछल गयीं, एक-एक, तानपापो और फुकी-नो-टु के सिरों पर। उन दो प्रसन्न मित्रों को, वर्षा की उन बूँदों का स्वाद कैसा लगा, इसे शब्दों में बयान कर पाना मुश्किल है।

तब से तानपापो और फुकी-नो-टु सूरज की ओर बढ़ते रहे, बढ़ते रहे, सूरज ही की तरफ़, इतनी प्रफुल्लता और उत्साह से ... ''जब मुझे याद आता है कि इन दोनों के साथ क्या हुआ, तो मेरा मन हरिन के छौने की तरह कुलाँचे भरने लगता है। हाँ, सचमुच, धीरे-धीरे बढ़ने में कितना मज़ा आता है ...''

बहुत ही धीमे-से ये शब्द कहकर किसी ने साँस छोड़ी और गर्म हवा का एक और झोंका अपनी राह पर निकल पड़ा।

रेगिस्तान का डायनासोर

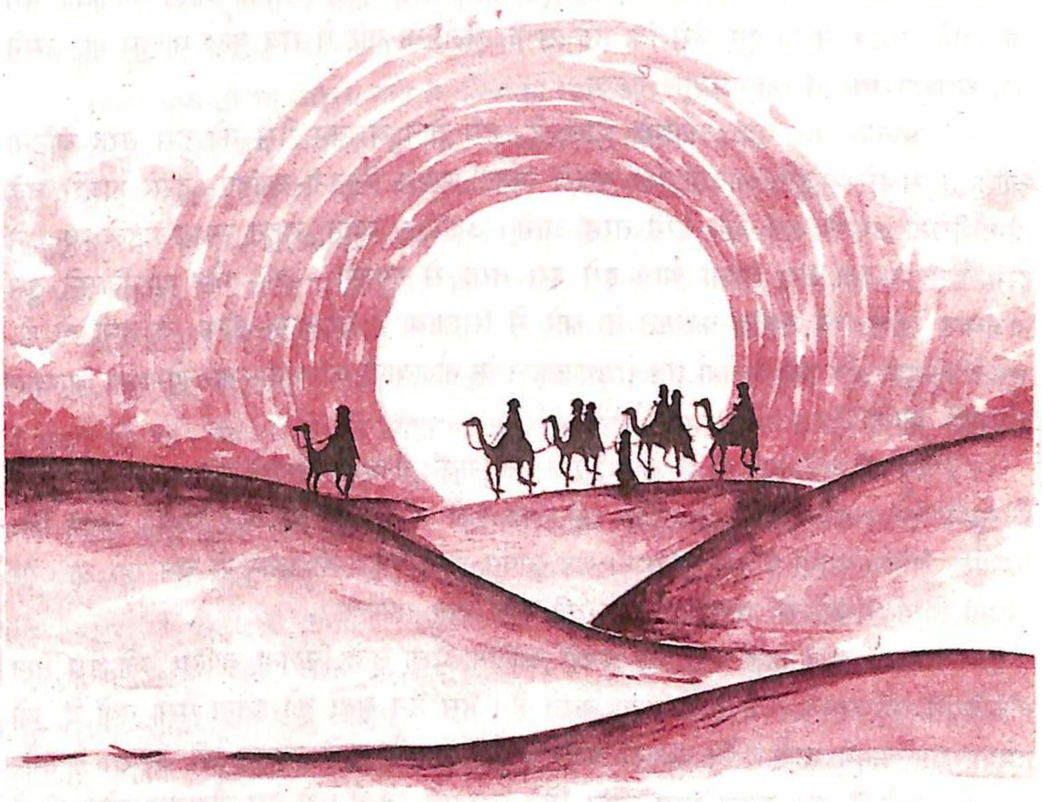

यह कोई बहुत पहले की बात नहीं है। एक दिन सौदागरों और ऊँटों का एक कारवाँ ऊँटों की पीठ पर बेहतरीन दर्जे की सुगन्धित तेलों की कई हंडियाँ लेकर एक लम्बे-चौड़े रेगिस्तान के पार जा रहा था। ये सौदागर पहली बार बाज़ार में तेल बेचने जा रहे थे। जब वे रेगिस्तान के बीचोबीच पहुँचे तो उनके बीच एक बड़ा भारी विवाद उठ खड़ा हुआ।

यह रहा उनके झगड़े का कारण। ध्यान से सुनिये—

इस कारवें में शामिल सौदागर इस बात पर एक मत नहीं हो सके कि सुगन्धित तेल को बेचने के बाद वे पैसे को आपस में कैसे बाँटेंगे। रेगिस्तान को पार करते-करते वे बहस करते रहे, लेकिन झगड़े का फ़ैसला नहीं कर सके। आख़िरकार, सौदागरों ने एक नखलिस्तान में रुके अपने ऊँटों को खजूर के पेड़ों के साथ बाँधा और गोलबंद होकर इस समस्या पर बातचीत करने लगे।

बोलनेवालों में सबसे पहला था, झुके कन्धोंवाला बूढ़ा, जिसकी आँखें चालाकी-भरी थीं। ऐसे नाटक करते हुए जैसे कि उसे सभी चीज़ों के बारे में सब कुछ मालूम हो, उसने बड़े घमण्डी स्वर में कहना शुरू किया :

बेशक़, हर एक आदमी ध्यान दे, हमें तेल बेचकर पैसे को इस तरह बाँटना चाहिए। सबसे बुज़ुर्ग आदमी को सबसे ज्यादा रक़म मिलनी चाहिए, दूसरे सबसे बूढ़े आदमी को उससे कम और इसी तरह आगे। आख़िर, बहुत, बहुत समय पहले खुदा ने इसी तरह से तो तय किया था। इसे इस तरह से समझो—वह कौन था जिसने तुम नौजवान लोगों को ख़रीद-फ़रोख्त के बारे में सिखाया ? बिल्कुल ठीक, वे हमीं तो थे, तुम्हारे बुजुर्ग और इसे भूलना मत ! आजकल के नौजवानों को शुक्रगुज़ार होना तो बिल्कुल भी नहीं आता।''

जैसे ही बूढ़े आदमी ने बात ख़त्म की, एक नौजवान बोलने को उठ खड़ा हुआ, जिसकी मूँछें साइकिल की हैंडलबार की तरह ऐंठी ओर मुड़ी थीं और जिसने अपने सिर पर एक सफ़ेद पगड़ी लपेटी हुई थी। वह अपने शब्द बहुत ही ध्यान से चुन रहा था और अपनी तीखी नज़रों से आसमानी छोर की ओर देख रहा था।

''इसमें कोई शक़ नहीं कि सबसे अधिक पैसा उन्हें मिलना चाहिए, जो इस तेल को बेचने की सबसे ज्यादा कोशिश करते हैं। हम उन बूढ़ों को इतना पैसा क्यों दें, जो हमेशा यह कहते रहते हैं कि उनका बदन दुखता है और उन्हें आराम की ज़रूरत है और जो थक जाते हैं तथा इतना सारा वक़्त सोने में लगा देते हैं। ये हम नौजवान लोग ही हैं जो दिन-रात काम में जुटे रहते हैं। अगर काम के हिसाब से पैसा मिलेगा तो हम नौजवान लोग और अधिक मेहनत से काम करेंगे।''

इस पर ''लेकिन ... तो ...'', दायरे के बाहर की तरफ़ बैठे एक छोटे-से, ज़र्द चेहरेवाले घबराये-से आदमी की आवाज़ सुनायी दी और फिर गुस्से-भरी आवाज़ में उसने कहा, ''मैं तो शुरू से यही कह रहा था। इस तरह के झगड़े को निपटाने का एकमात्र विश्वसनीय तरीक़ा है इस दुनिया में स्थापित व्यवस्था। आपके ख़याल में 'वंश परम्परा'

और 'वर्ग'-जैसे महत्त्वपूर्ण नियम किसलिये बने हैं ? दरअसल सबसे ज्यादा पैसा उन्हें मिलना चाहिए जो जन्म से ही सर्वोच्च वर्ग से सम्बन्ध रखते हैं। दोस्तो, आखिर यह शर्म की बात नहीं है कि हम पैसे के मामले को लेकर झगड़ा करें ? ओह, मैं तो यह बताना भूल ही गया कि पिता की ओर से मैं महाराजाओं क देश के एक राजा की संतान हूँ।''

''बहुत हो चुका ! अब एक भी शब्द और नहीं !'' एक चौथा आदमी चिल्लाया। यह आदमी जिसका दुबला-पतला शरीर एक फटे कपड़े में ढका हुआ था और जिसके बाल बिखरे हुए थे, आँखें नचा-नचा कर बोलने लगा :

''आपमें एक ठो भी अइसा नहीं है, जिसका दिल कोमल हो। अगर आपमें ज़रा-सा भी रहम रहता न तो हम समझते हैं कि आप अइसी कठोर अउर मतलबी बात नहीं बोलते। देखिये, अगर अमीर लोग तेल बेचकर पइसा नाहीं भी पाते हैं तो ऊ भूख से मर नहीं जायेंगे। लेकिन ग़रीब लोग का बात दूसरा है। वह अलग है। अगर इसे अपना हिस्सा नहीं मिलेगा तो वह तो भूख से मर ही जायेगा न ! हाँ, इतिहास में भी लोग ग़रीब पर ही तरस खाते हैं न ! ग़रीबी में जनम लेने पर, ऊ कभी भी भरपेट खाना नहीं खाया ... ।''

जब ही इस आदमी ने अपना रूखा भाषण समाप्त किया, सूरज दूर क्षितिज के नीचे डूबने को था। गोल बाँधे बैठे सौदागरों की परछाइयाँ रेगिस्तान की ठण्डी रेत में लम्बी हो गयीं और सौदागरों को एकाएक अहसास हुआ कि वे सचमुच कितने थके हुए हैं।

''इस तरह बहस कर रहा है ...'' अपनी सफ़ेद दाढ़ी को ध्यानपूर्वक सहलाते हुए पाँचवाँ गुर्राया, ''दिखता नहीं कि इस झगड़े का अन्त होनेवाला है ? लगता है आप सबमें अक्ल की थोड़ी-सी कमी है। अक्ल की कमी की वज़ह से जिन्दग़ी-भर नुक़सान ही उठाना पड़ता है। सुनो, सभी को सन्तुष्ट करने के लिए हमारी मेहनत से कमायी गयी दौलत सबमें बराबर बाँट देनी चाहिए—यही इस मामले को सुलझाने का सबसे अक्लमंद तरीक़ा है, क्योंकि बेवकूफ़ी सबको तबाह कर देती है।'' अपने छोटे-से भाषण को समाप्त करके वह व्यक्ति सन्तुष्ट होकर बैठ गया।

एकाएक, एक काली दाढ़ीवाला आदमी उछल पड़ा, जो गिरोह में सबसे बड़ा और तगड़ा था। उसने अपनी तलवार निकाल ली और गुर्राया, ''जिसकी लाठी उसकी भैंस !'' भयावह आवाज़ में बोलते हुए उसने अपने सभी हैरान साथियों पर नज़र डाली। शाम के ढलते सूरज में उसका लाल चेहरा उसे और भी डरावना बना रहा था।

''समझे ? चाहे रेगिस्तान के बीचोबीच हो या शहर के अन्दर, सबसे शक्तिशाली हथियार, सबसे ताक़तवर तलवारवाला बादशाह होता है। राज़ा कौन है, इसे तय करने

का सबसे आसान तरीक़ा है, सभी अपनी-अपनी तलवारें निकाल लो !" इसके साथ ही काली दाढ़ीवाले शैतान ने अपनी तलवार अपने ठीक सामने बैठे एक आदमी के सीने में घुसेड़ दी, जो अभी अपनी तलवार निकालने ही जा रहा था।

ख़ैर, झगड़ा अब एक आसान-सी बहस तक सीमित कर नहीं रह गया था। तगड़े और कमज़ोर, सभी सौदागरों ने तलवारें निकाल लीं और एक दूसरे को बिना देखे मारने-काटने लगे।

गदर मच गया ! शोर और गड़बड़ी के बीच कारवाँ के लोग बिना सोचे-समझे, जो भी नज़दीक था, उसे मारने लगे। एक-एक करके आदमी गिर पड़े। कमज़ोर पहले गिरे और रेगिस्तान की रेत में खून का तालाब धीरे-धीरे फैलने लगा।

इन लोगों के लड़ने की आवाज़ों और शाम की धूप में चमकती तलवारों से घबरा कर खजूरों में बँधे ऊँट बेचैन हो उठे और हिलने-डुलने तथा पैर पटकने लगे। उनकी पीठों पर रखे बर्तन गिर पड़े और ज़मीन से टकराकर चूर हो गये और क़ीमती तेल भी धीरे-धीरे रेत में समा गया। लेकिन फिर भी इस पर किसी आदमी ने ग़ौर नहीं किया। वे तो एक-दूसरे को मारने में इतने मशगूल थे कि वे तेल के बारे में बिल्कुल भूल गये थे।

वे कितनी देर लड़ते रहे, कह पाना मुश्किल है। आख़िर एक-एक करके कारवाँ के लोग ढेर हो गये तो सिर्फ़ काली दाढ़ीवाला और सिर पर सफ़ेद पगड़ीवाला नौजवान ही बच रहे।

जब साँझ ढल रही थी तो उनकी तलवारों के टकराते समय रेत में उड़ती आग की चिनगारियाँ देखी जा सकती थीं। लेकिन उनके लड़ने की आवाज़ भी जल्दी ही ख़त्म हो गयीं। दोनों आदमी, तलवारों के कई घावों से ढके, रेत में गिर पड़े। थकान से उनमें बोलने तक की ताक़त भी नहीं रही थी।

उस समय एक नया चाँद उभर रहा था और उस रात आसमान इतने सारे चमकते तारों से भरा था कि उन्हें गिनना भी मुश्किल था। रेगिस्तान में एक बार फिर शान्ति थी तथा चाँद की नीली-सफ़ेद रोशनी में सौदागरों की लाशें, उनके चकनाचूर बर्तन और उनके ऊँट, जो अभी भी पेड़ों से बँधे थे तथा अब शान्त हो गये थे और ताज़े दिखायी दे रहे थे।

तभी रेगिस्तान की रेत धीरे-धीरे उठने लगी और जल्दी ही रेत का एक पहाड़-सा बन गया। फ़िर टनों रेत के खिसकने की आवाज़ के साथ एक भीमकाय डायनासोर रेत के ढेर से प्रकट हुआ।

यह डायनासोर उस गहरी रेत में हज़ारों सालों से सोया हुआ था, लेकिन उसे कभी भी भूख-प्यास महसूस नहीं हुई थी, क्योंकि उसके ठीक सिर के ऊपर ही यह नखलिस्तान था। इस नखलिस्तान के ठीक बीचो-बीच यह झरना था और हर रोज़ बहुत-सा साफ़, ठण्डा पानी झरने में से निकलकर इस डायनासोर के मुँह में गिरता था।

इस भीमकाय जानवर की पीठ पर बहुत-से लम्बे काँटे थे जो आकाश को चीरते-से लगते थे और चाँदनी में अजीब-से लग रहे थे। उसके चेहरे पर दो बड़ी-बड़ी लाल आँखें चमक रही थीं और उसके मुँह में ऊबड़ खाबड़ दाँतों की क़तारें थीं जो इतनी बड़ी और शक्तिशाली थीं कि चट्टानों को चबाकर चूर कर दें।

डायनासोर थोड़ी देर खड़ा रहा, धीरे-धीरे अपनी थूथन को वहाँ पड़े हुए आदमियों को देखने के लिए घुमाता हुआ। फिर धीरे-से झुका और अपना बड़ा-सा मुँह खोलकर उन्हें एक-एक करके खाने लगा। इन में कुछ ऐसे भी थे जो आखिरी साँस लेते हुए कराह रहे थे और कुछ ऐसे भी जो बुरी तरह घायल होने के बावजूद हिल-डुल रहे थे। लेकिन डायनासोर ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। डरावनी, गटकने और चबानेवाली आवाज़ों के साथ वह उन्हें खाता रहा और आख़िरी लाश को ख़त्म करने के बाद उसने ज़ोर से छींक मारी और फिर खुद से बातें करने लगा।

"ओह, कितनी हाय-तौबा मची थी। ये इन्सान भी काफ़ी शोर-शराबेवाली चीज़ हैं। समझ में नहीं आता कि ये आपस में इतनी ज़ोर-ज़ोर से क्यों बहस करते हैं ? और इसे हमेशा ख़त्म करते हैं एक-दूसरे से झगड़ा करके। मेरा इरादा अगले पचास हज़ार साल तक सोये रहने का है, क्योंकि मेरे ख़याल से तब तक धरती पर कुछ शान्ति हो जायेगी।"

डायनासोर ने ज़ोर की डकार ली।

"खैर, क़िस्सा यूँ शुरू हुआ। इन इन्सानों ने ठीक मेरे सिर पर बहस शुरू कर दी और मुझे जगा दिया। जल्दी ही इधर-उधर भागमभाग होने लगी तथा तलवारें टकराने लगीं। फिर सुगन्धित तेल की इतनी बढ़िया ख़ुशबू ने मेरी नाक को गुदगुदाया। इस सबके कारण मैं सो नहीं सका, इसलिए मुझे यहाँ ऊपर आना पड़ा और मैंने यह विनाश देखा।"

डायनासोर ने फिर अपनी पीठ टेढ़ी की और धीरे-से रेत पर बैठ गया। उसने अपनी पूँछ को समेट लिया ताकि वह काँटों में न उलझ जाये। फिर रात के साफ़ आसमान में चमकते हुए सितारों को देखा।

"आह, सितारे उस समय से बिल्कुल भी नहीं बदले हैं, जब इस धरती पर हम डायनासोरों का साम्राज्य था ... हमारे वक़्त में भी लड़ाई कभी नहीं थमी और एक-एक

करके हमारे बहुत-से दोस्त मर गये। सभी, हर एक !" डायनासोर ने गहरे अवसाद से कहा, "मर गये और खप गये ... मेरे सभी भाई-बहन, दोस्त सभी मर गये।"

"इनसे लड़ने के बाद और उन सबको मार देने के बाद मैंने सबको अपना दोस्त मानने से इंकार कर दिया था। मैंने शान्त रेगिस्तान के नीचे उस समय तक सोये रहने का फ़ैसला किया था जब तक कि सारी लड़ाई समाप्त नहीं हो जाती। लेकिन, ख़ैर, अब इन्सानों की बारी है। ये बेचारे दो टाँगोंवाले छोटे-छोटे प्राणी दिनों दिन बढ़ते चले गये, बढ़ते चले गये। इन्होंने फिर सारी धरती को ढक लिया और अब ये इधर-उधर लड़ने-झगड़ने लगे हैं। मैं बता सकता हूँ कि अब क्या होनेवाला है ? अगर ये इसी तरह लड़ते रहे तो जल्दी ही समाप्त हो जायेंगे। कितने दुख की बात है !"

डायनासोर ने धीरे-से अपनी आँखें बन्द कीं और अपने विशाल पेट में शुरू हुए एक बड़े-से डकार को रोका, फिर अपनी बड़ी-बड़ी लाल आँखों को खोलकर इधर-उधर घुमाया। लगता था विगत में कुछ घटा था, उसे याद करने का यत्न कर रहा हो।

एक बड़ा-सा आँसू उसकी आँख में चमक उठा। फिर उस भीमकाय डायनासोर ने एक गहरी साँस भरी और धड़ाम से रेत पर गिर गया। कुछ ही मिनटों में वह एक पहाड़नुमा जीवावशेष बन गया था।

उसी समय आकाश में, भोर के वक़्त, रेगिस्तान के ऊपर एक आश्चर्यजनक इन्द्रधनुष दिखाई दिया, जो इतना बड़ा था कि लगता था कि वह आकाश को तारों समेत लील जायेगा।

"क्या यह मृगतृष्णा है ?" रेगिस्तान के आसमान में चारों तरफ़ एक फुसफुसाहट-सी फैल गयी जिसे हवाओं ने ज़मीन और उसके भी परे बिखरा दिया।

आख़िर कहाँ से आता है वसन्त!

मारुति पर्वत पर जो कि किसी भी गाँव से बहुत दूर था, इस साल बर्फ़ इतनी ज्यादा मात्रा में गिर रही थी, जैसे कि कभी ख़त्म ही न होगी।

मारुति पर्वत के मुखिया दानकिची ने जब गुफा के द्वार से बाहर अपना सिर निकाला और चौड़े आसमान को निहारा तो काँप गया। पहाड़ियों, नंगे ठूँठ पेड़ों और सूखी घास के मैदानों को ढकती हुई बर्फ़ दूर-दूर तक तक ऐसे गिर रही थी, जैसे कि आकाश में की जा रही आतिशबाज़ी की सफ़ेद चिनगारियाँ हों।

इस दृश्य को देखकर दानकिची हैरान रह गया। उसने अपने अन्दर किसी को यह कहते हुए सुना, "काश, इन हिमलवों में से हर एक के लिए खाने की कोई चीज़ होती" और वह अपनी उँगलियों पर कुछ गिनने लगा।

"सेब, अंगूर, नेजे, बीजफल ... हाँ, और तेंदु, शकरकन्दी ... ! ओह, पहले एक महीने से तो मेरे पेट में कुछ भी नहीं गया है। बेचारा पेट तो पीठ से जा लगा है और अगर हालत बेहतर न हुई तो मैं भूख से ही मर जाऊँगा।"

बन्दरों के मुखिया को ज़ोर की कँपकँपी छूट गयी और दाँत किटकिटाते हुए उसने अपनी आँखें गुफा के अन्दर की ओर घुमा लीं।

गुफा की हल्की रोशनी में दानकिची का मारुति पर्वत का सारा क़बीला बैठा था। हर परिवार या मित्रों का झुण्ड गर्माहट के लिए एक-दूसरे से सटा बैठा था। निराश शिशु माताओं की छातियों से चिपके थे, बच्चे असंतोष में दाँत किटकिटा रहे थे और बड़े-बूढ़े बन्दर सिर एक तरफ़ को घुमाये आकाश को घूर रहे थे। जो बन्दर कमज़ोर और दुबले-पतले थे और जिनकी सिर्फ़ आँखें ही जीवन-ज्योति से चमक रही थीं, वे उन आँखों से मुखिया दानकिची की ओर मूक-भाव से देख रहे थे, खाने को कुछ माँगते हुए।

दानकिची कई वर्षों से मारुति पर्वत का मुखिया था। वह अपने क़बीले में सबसे अधिक शक्तिशाली ही नहीं था, बल्कि अपनी बुद्धि, बहादुरी और उदार स्वभाव के नाते उसे उन बन्दरों का आदर भी प्राप्त था, जिनका वह राजा था।

जब कभी दुश्मन बन्दर हमला करते तो दानकिची हमेशा अपने क़बीले की अगुआई करके उनका मुक़ाबला करता और अगर कभी अपने ही बन्दरों में झगड़ा होता तो वह तुरन्त सुलह करवा देता। हाँ, वह बूढ़े, मादा तथा शिशु बन्दरों का भी विशेष ध्यान रखता था।

इसीलिए सभी बन्दरों की उम्मीदें उसी पर लगी थीं। ज़िम्मेदारी का बोझ महसूस करते हुए उसने अनजाने में ही दाँत भींच लिये और आँखें बन्द कर लीं और अपनी अक़्ल से काम लेने की कोशिश की।

आँखें बन्द रहने पर भी, सोचने की लाख कोशिशें करने पर भी एक दृश्य उसकी आँखों के सामने नाचता रहा। यह घटित हुआ था इसी साल की भयंकर गर्मी के अन्त में एक दिन।

इस वर्ष गर्मी इतनी अधिक थी कि मारुति पर्वत के सबसे बूढ़े बन्दर ने भी गर्मी का ऐसा मौसम नहीं देखा था। जलते सूरज की गर्मी तले तपते आसमान ने खेतों और पहाड़ों को भूनकर भूरा कर दिया था। आकाश का नीला रंग फीका पड़कर सफ़ेद हो गया था। बादल उड़ते-फिरते थे बरसात की उम्मीद लिये, लेकिन प्यासी धरती पर एक भी बूँद नहीं गिरी थी। इतनी अधिक गर्मी से खेतों की फ़सलें पहले झुलस गयी थीं और फिर जल गयी थीं।

गाँववाले बहुत ही निराश थे। अगर जल्दी ही कुछ न हुआ तो ऐसा भयंकर अकाल पड़ेगा जैसा कि किसी ने सुना भी न हो। हर रोज़ गाँववाले लगभग सूख चुकी नदी से पानी दूर खेतों तक ले जाते तथा सूखी तलहटी में से पानी तक खोदने का प्रयास करते। वे जीवन को बचाने के लिए लड़ रहे थे, लेकिन उनकी मेहनत सफल नहीं हो रही थी।

पतझर का मौसम आते-आते धान के पौधे धरती पर गिर चुके थे एक भी दाना पैदा किये बग़ैर। सब्ज़ियों के बाग़ भी ख़ाली थे और यहाँ तक कि जंगली घास और बागर तथा पहाड़ों के पेड़ भी सूखकर गिर गये थे। ऐसा लगता था कि सारा पानी कहीं और चला गया था। ऐसी हालत में जीवों का बड़ा बुरा हाल हो गया था।

चूँकि ऐसा लगता था कि गर्मी का यह दौर कभी ख़त्म ही नहीं होगा—बन्दरों का मुखिया दानकिची स्वयं पहाड़ से नीचे, जहाँ लोग रहते थे, यह देखने गया कि वहाँ की क्या हालत है। इस साल मारुति पर्वत पर नेजे और बीजफल भी नहीं हुए थे और दानकिची को पता था कि उसके क़बीले के पास आनेवाली सर्दी में खाने के लिए पर्याप्त भोजन भी नहीं होगा। वह यह देखने जा रहा था कि क्या वह गाँव के खेतों में से कुछ अनाज चोरी कर सकता है।

दानकिची को विश्वास नहीं हुआ कि गाँव के आस-पास स्थिति इतनी ख़राब है। खेतों में ज़मीन सूखी थी और उनमें दरारें पड़ गयी थीं। फ़सल का दूर-दूर तक नामो-निशान नहीं था, सिर्फ़ हवा में नाचती-बिर्राती सूखी धूल थी।

उसने कुछ और भी देखा। भूख और गर्मी से सताये हुए ग्रामवासी सड़कों के किनारे चुपचाप लेटे थे और उनकी सूखी आँखें मौत की ओर नज़रें गड़ाये हुए थीं। इस तपते हुए तथा सूखाग्रस्त स्थान में कोई भी ऐसा इन्सान दिखाई नहीं पड़ता था जो ज़ालिम सूरज के नीचे सूखती लाशों को भी हटा सके। अभी भी लोग झोंक में इधर-उधर ठोकरें खाते पहाड़ों की ओर बढ़ रहे थे, लेकिन ऐसा नहीं लगता था कि वे ज्यादा दूर तक जा सकेंगे।

दानकिची इन अविश्वसनीय दृश्यों को देखता रहा। उसकी कँपकँपी छूट गयी और उसका शरीर पसीने से तर-बतर हो गया। वह मन-ही-मन झल्लाया, ''ओह, यह तो बहुत ही ज्यादती है। इन ग़रीबों पर कितना बड़ा अकाल आ पड़ा है। इस तरह अस्त-व्यस्त

तरीक़े से इधर-उधर ठोकरें खाते हुए तो उन्हें अपने ही लोग पकड़कर खा जायेंगे—ओफ़, कितनी ज्यादती है।''

दानकिची झुककर, झाड़ियों में छिपते हुए, वापस मारुति पर्वत की ओर जितनी तेज़ी से भाग सकता था, भाग खड़ा हुआ। उसके पास खोने के लिए बिल्कुल भी वक्त नहीं था। उसे अपने क़बीले को तुरन्त इस महा अकाल की सूचना देनी थी।

अगर इन्सानों की यह हालत है तो जल्दी ही मारुति पर्वत को भी शायद ऐसी ही मुसीबत और परेशानी का सामना करना पड़े। दाँत किटकिटाते और चारों पैरों पर भागते हुए दानकिची का मन निराशा से भर गया।

''हे भगवान, अभी तो पतझर ही है। कैसे बितायेंगे हम इतनी लम्बी सर्दी ? जब बर्फ़ की तरह जमा देनेवाली हवाएँ चलेंगी और गहरी बर्फ़ के कारण हम दुनिया से कट जायेंगे ... पिछले वर्षों में तो हम पतझर के खत्म होते ही पहाडों से उतरकर गाँव में खेतों से कच्चा-पक्का अनाज चुराने चले जाते थे लेकिन इस साल तो कुछ भी नहीं है। यह तो बहुत बड़ी विपदा है।''

चिन्ता स सिर हिलाते हुए और यह सोचते हुए कि क्या किया जाना चाहिए, वह मारुति पर्वत का रास्ता चढ़ने लगा। दानकिची एकाएक रास्ते में रुक गया। नदी के किनारे के खर-पतवार से सरसराहट की आवाज़ आ रही थी जैसे कि कोई काम में जुटा हो। दानकिची चुपचाप आवाज़ की ओर सरक गया।

उसने देखा कि एक किसान बड़ी उतावली में ज़मीन से कुछ उठाकर अपनी बाँह के नीचे दबाये बक्से में कुछ डाल रहा था।

''आहा, शायद खाने के लिए कुछ हो ?'' दानकिची ने सोचा और वह बक्से में झाँकने के लिए किसान के पीछे सरक आया। बक्सा गहरी लाल बड़ी, छतरीनुमा खुम्बियों से लगभग पूरा भरा हुआ था।

''अरे, एक मिनट ...'' दानकिची ने खुद से कहा और किसान के चेहरे को हैरानी से देखा। ये लाल, बड़ी, छतरीनुमा खुम्बियाँ ज़रूर ज़हरीली, हँसीवाली खुम्बियाँ हैं। ज़हरीली हँसीवाली खुम्बियाँ तो जानलेवा होती हैं। जो भी इन्हें खाता है वह पहले तो हँसने लगता है और फिर जैसे-जैसे हँसी आपे से बाहर होकर बढ़ती जाती है, आदमी पूरी तरह पागल होकर मर जाता है। जब मैं छोटा था तो उस बूढ़े बन्दर ने, जो मारुति पर्वत का मुखिया था, इन खुम्बियों में से किसी को न खाने के बारे में आगाह किया था। ज़रूर ये उसी तरह की खुम्बियाँ हैं।

दानकिची ने अपने चेहरे पर से चू रहे पसीने को पोंछा और खुद से कहा, "अजीब बात है ! अगर यह किसान यहीं आस-पास रहता है तो इसे ज़रूर पता होगा कि ये सुर्ख़ लाल खुम्बियाँ बहुत ही ज़हरीली होती हैं। समझ में नहीं आता कि क्या हो रहा है ... ?"

किसान ने झाड़ियों में से देख रहे बन्दर की ओर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया और वह उसी तरह ज़हरीली, हँसीवाली खुम्बियाँ तोड़कर बक्से में डालता रहा। फिर ज्यों ही वह खुम्बियों से भरे बक्से को लेकर गाँव की ओर चलने लगा तो दानकिची चुपचाप उसके पीछे हो लिया। शायद इस किसान को पता था कि इन खुम्बियों के ज़हर को कैसे अलग किया जा सकता है ताकि वे खाने लायक़ बन सकें।

धीरे-धीरे किसान गाँव के बाहर एक छोटे-से घर के पास पहुँचा और फिर अन्दर चला गया। दानकिची एक छोटी-सी खिड़की के पास सरक आया और उसने अपनी नाक उसके साथ सटा दी।

घर छोटा, लेकिन आरामदेह और सुरुचिपूर्ण था और कमरे में बहुत-से बच्चे थे। दानकिची उँगलियों पर गिनने लगा, "एक दो, तीन, चार, पाँच, छह, सात ... ओह सचमुच सात छोटे-छोटे भाई-बहिन।" बच्चों ने अपनी महीन और मीठी आवाज़ में पिता का स्वागत किया। उन्होंने पिता से बक्सा लेने के लिए अपने हाथ आगे बढ़ा दिये। दानकिची ने अपनी साँस ही रोक ली, जब उसने देखा कि उनकी कलाइयाँ और बाँहें बहुत ही पतली और कमज़ोर थीं।

पिता ने अपनी पत्नी को रसोई में से बुलाया और उसके कान में कुछ कहा। खिड़की के बाहर से दानकिची कुछ सुन तो नहीं पाया लेकिन उसने देखा कि अपने पति की बात सुनकर बच्चों की माँ ने धीरे-से अपना सिर हिलाया। उसके चेहरे पर दुख का गहरा भाव था।

माँ ने बच्चों से बक्सा ले लिया और वापस रसोई में जाते हुए उनसे कुछ कहा।

उनकी माँ ने जो कुछ भी कहा था, उसे सुनकर बच्चे एकाएक इतने ख़ुश हो गये कि दानकिची को अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। अपने हाथ-पैर इधर-उधर पटकते तथा चिल्लाते हुए बच्चे कमरे में चारों ओर आश्चर्यजनक स्फूर्ति से खेलने-कूदने लगे।

रसोई में खुम्बियों से भरा एक बर्तन, लपलपाती आग पर उबलता हुआ, एक मधुर संगीत गुनगुनाने लगा।

"हूँ, मैं नहीं समझता कि उसने खुम्बियों में ज़हर अलग करने के लिए कुछ विशेष किया है ...। ख़ैर, यहाँ हो क्या रहा है ?" खिड़की के बार खड़ा दानकिची चुपचाप यह

सब देखते हुए सोचने लगा।

जल्दी ही खुम्बी-सूप से भरे छोटे-छोटे कटोरे एक-एक करके सातों बच्चों को दे दिये गये। पूरे परिवार द्वारा खाने का मज़ा लेते समय कमरा कटोरों से उठ रही भाप से भर उठा। उत्साह से खाना शुरू करते ही बच्चों की आँखें चमकने लगीं। किसान और उसकी पत्नी ने बच्चों को स्नेह से निहारा और धीरे-धीरे अपनी चॉपस्टिक्स को मुँह की ओर उठाया।

"पिता जी यह तो मज़ेदार है !"

"सच ? बहुत है, इसलिए जितना चाहो, खा सकते हो।"

"मैंने इससे मज़ेदार खाना कभी नहीं खाया !"

"माँ, मेरा कटोरा फिर भर दो।"

"तुम्हारे पिता ने इन खुम्बियों को घर लाने में बहुत मेहनत की है। इसलिए सारा सूप ख़त्म करना होगा।" माँ ने कहा।

हँसते और बातचीत करते हुए परिवार ने खुम्बी-सूप के कई कटोरे समाप्त कर दिये। सातों बच्चे अपने चेहरों पर संतोष भरी मुस्कान लिए फ़र्श पर बिछी चटाई पर लेट गये।

दानकिची बड़ी हैरानी से खड़ा चुपचाप देखता रहा। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह कैसी प्रतिक्रिया की उम्मीद करे। वह पिता के चेहरे को ग़ौर से देख रहा था। जब किसान मुस्कुराहट-भरी नज़रों से अपने बच्चों को देख रहा था तो उसकी आँखें भर आयीं और एक बड़ा-सा आँसू गाल पर से लुढ़ककर सूप के ख़ाली कटोरे में गिर पड़ा।

फिर एकाएक

"आहा, हा, हा ! हा हा, हा, हा !
हा, हा, हा, हाहा ... !"

कमरा जल्दी ही हँसी की आवाज़ों से भर गया लेकिन वे आवाज़ें इन्सानी नहीं लग रही थीं। पिता पेट पकड़कर हँस रहा था। एक पल बाद उसकी पत्नी और बच्चे भी अविश्वसनीय हँसी से लोट-पोट होने लगे।

"हा, हाहा ..., हा, हा ..आ .. हा, हा, हा !
हा, हाहा ..., ओहा, हा ..हा .. हा, हा !"

हँसी को न रोक पाते हुए पेट पकड़कर और मुँह फाड़े वे फ़र्श पर लुढ़कने लगे। इधर-उधर ठोकरें खाते हुए, दीवारों से टकराते हुए, वे और ज़ोर से हँसने लगे, उनके चेहरे मुड़-तुड़कर अज़ीबोगरीब आकृतियों में बदल गये थे।

उसके बाद जो कुछ हुआ, वह इतना भयावह था कि बाद में उस दृश्य की याद मात्र से ही दानकिची के शरीर के रोंगटे खड़े हो गये। उसके दिल में सिहरन-सी घर कर गयी।

सभी आवाज़ें हँसी से विलाप में बदल गयीं, उनके चेहरे—सुन्दर, छोटे-छोटे मासूम चेहरे नीले होने लगे। फिर मुँह से खून-भरी झाग फेंकते हुए वे फ़र्श पर धराशायी हो गये और उनके हाथ-पैर काँपने लगे। वे वहीं मर गये और उन्हीं के साथ मर गयी उनकी हँसी।

दानकिची वहीं खड़ा रहा, आँखें फाड़-फाड़ कर यह सब देखता रहा। उसका चेहरा ज़र्द पड़ गया और शरीर काँपने लगा। जब वह हिलने-डुलने लायक़ हुआ तो खिड़की से पीछे हटा और जितनी तेज़ी से हो सकता था, मारुति पर्वत की ओर भाग निकला।

"ओह, कौन सोच सकता था ... विश्वास नहीं होता ! सभी मर गये, वे प्यारे-प्यारे छोटे बच्चे भी ... आह, लेकिन इस भीषण सूखे की चपेट में आकर तिल-तिल कर दर्द-भरे तरीक़े से मरने से तो जितनी जल्दी हो, सभी का एक साथ मरना बेहतर है जैसा कि इस किसान के परिवार ने किया। कम-से-कम आख़िरी समय तो वे भरपेट खा सके। ... हाँ, हाँ इसी तरह तो... नहीं, यह नहीं हो सकता। भोले-भाले बच्चों को ख़ुश करना और फिर उन्हें मार देना, यह पाप है, जिसे सिर्फ़ शैतान ही कर सकता है ... ओह, लेकिन क्या यह उससे बेहतर नहीं है कि माँ-बाप को अपने बच्चों को एक-एक करके मरता हुआ देखना पड़े या माँ-बाप मर जायें और बेचारे छोटे बच्चों को छोड़ जायें, अकेले भूख से तड़पकर मर जाने को ? मैं तो ऐसी त्रासदी के बारे में सोच भी नहीं सकता। मैंने पहले कभी इन भयावह बातों के बारे में जैसे कि अपनी जान ले लेना, या इससे भी ख़राब, अपने ही बच्चों को मार देना, सोचा तक नहीं ... ओह, लोग कुछ बहुत ही घिनौनी बातें करते हैं।"

चेहरे पर घोर निराशा की भावनाओं की मूरत तराशे हुए दानकिची पहाड़ों की ओर भाग निकला। एकाएक वह रुका, उसने दायें-बायें देखा और तेज़ी-से एक छोटी पगडंडी की ओर घूम गया। नदी के किनारे कूदते-फाँदते हुए, उसने कई ज़हरीली, सुर्ख लाल रंग की खुम्बियाँ तोड़ीं और उन्हें पास के एक पेड़ की खोह में छिपा दिया।

"मैंने उन ज़हरीली खुम्बियों के गुच्छे को तोड़कर उस पेड़ की खोह में छिपा दिया है, क्यों नहीं ..." बन्दरों के मुखिया दानकिची ने पहाड़ों और नीचे घाटी में गिरती हुई बर्फ़ को देखते हुए साँस भरी।

गुफा के द्वार पर अपनी स्वाभाविक स्वाभिमान-मुद्रा में बैठे हुए दानकिची ने ध्यान

रखा कि बन्दर अपने मुखिया के भीतर चल रहे असमंजस को भाँपने में सफल न हो पायें।

"सरदार", कोई चिल्लाया। दानकिची मुड़ा और देखा कि गोन्ता जो युवा बन्दरों में सबसे शक्तिशाली था, गुफा में उसके पीछे खड़ा था।

"क्या है, गोन्ता? लगता है तुम किसी उलझन में हो। आओ, बैठो और मुझे बतलाओ कि तुम्हारे मन में क्या है?" युवा बन्दर की लाल-सुर्ख़ आँखों और गम्भीर हाव-भाव से दानकिची को अपने शरीर में सिहरन-सी दौड़ जाने का अहसास हुआ लेकिन फिर भी वह सख़्त, लेकिन स्वाभाविक लहजे में बोल सकने में सफल हो सका।

गोन्ता की आवाज़ खिंची हुई थी तथा भिंचे हुए दाँतों से आ रही थी, "सरदार, हम सब यह और सहन नहीं कर सकते ... हम चाहते हैं कि आप एक बैठक बुलायें, ताकि हम सब मशविरा कर सकें कि क्या किया जाना चाहिए?"

"चलो, अब वक़्त आ गया है", दानकिची ने सोचा और कहा, "ठीक है, सिर्फ़

तुम्हारी आँखें ही निराशा से नहीं भरी है, मैंने इस गुफा में सभी जवान बन्दरों की आँखों में यही भाव देखा है। तुम्हारी इन आँखों के सवालों के जवाब देने का वक्त भी आ गया है। कबीले के छोटे सदस्यों को बोलने की इज़ाज़त नहीं है, लेकिन वे बैठकर सुन तो सकते हैं।''

जब दानकिची हल्के, सम-स्वर में ये बातें कह रहा था, चिन्ता का एक वातावरण चुपचाप गुफा में फैल रहा था।

बन्दरिया माँओं ने अपने पतले-सिकुड़े शिशुओं को अपनी छातियों से चिपका लिया था और बच्चों को अपने आगे गुफा के अन्त में ठेल दिया था। फिर बूढ़े बन्दरों ने अँगड़ाइयाँ लीं और धीरे-धीरे उन कोनों से निकले, जहाँ वे गुफा में लेटे हुए थे और कबीले के नेता उन युवा बन्दरों से परे हट गये, जो उनकी खाल में से जुएँ निकाल रहे थे। गिरते-पड़ते,. थके-हारे शरीरों को गुफा के द्वार की ओर ले गये, हर चेहरे से यह अहसास झलक रहा था कि यह विचार-विमर्श कितना गम्भीर है। गम्भीर चेहरों के बीच सिर्फ़ आँखों की चमक शेष थी।

''अब मेरा ख़याल है कि आप सब यह तो जानते ही हैं कि हम यहाँ क्यों इकट्ठे हुए हैं। लू और सूखे से भरी ग्रीष्म तथा पतझर के बाद इस सर्दी के मौसम में हमारे पास खाने को कुछ भी नहीं है। जैसा कि आपको मालूम ही है आड़ू और अखरोट के पेड़ों ने बिना फल दिये ही पत्तियाँ गिरा दीं। नीचे घाटी में खेत और बाग़ सभी सूख गये हैं। वहाँ रहनेवाले लोग कभी के मर चुके हैं। यह एक ऐसा माहौल है जिसे हमने पहले कभी महसूस नहीं किया है। किसी तरह इधर-उधर से बटोरकर हमने अब तक ज़िन्दा रह सकने का भोजन जुटाया है, लेकिन अब लगता है कि यह बर्फ़ तो निरन्तर गिरती ही रहेगी। अगर ऐसा ही है तो क्या हमारा विवेक हमें कोई राह नहीं सुझा सकता ?''

दानकिची की बात समाप्त होने से पहले ही गोन्ता उठकर खड़ा हो गया। अपने कन्धों को पीछे झटका देकर उसने लम्बी साँस भरी और अपनी घनी भौंहों को तेज़ी से ऊपर-नीचे करते हुए बोला—''क़बीले के हम युवा सदस्यों ने फ़ैसला किया है कि मारुति पर्वत की नस्ल बनाये रखना बहुत ज़रूरी है। भविष्य में भी हमारी नस्लों के लिए यह ज़रूरी है कि वे शक्तिशाली बने रहें और कमज़ोर ख़त्म हो जायें। यह तो साफ़ ही है, क्यों ? अगर हम बूढ़ों और बच्चों पर भोजन बर्बाद करना बन्द कर दें तो जो ताक़तवर हैं वे शायद ज्यादा देर ज़िन्दा रह सकें।''

''की इइइ ... !'' एक बूढ़े बन्दर की तीखी आवाज़ गूँजी जो अपनी सूखी टहनी

जैसी पतली बाँहें इधर-उधर पटक रहा था।

"चुप ! तुम नौजवानों को यहाँ बोलने का अधिकार नहीं !"

"क्या ?" एक युवा बन्दर कूदकर उठा और चेहरे पर धमकानेवाला भाव लाते हुए बुजुर्ग बन्दर के सामने खड़ा हो गया।

"बन्द करो—काफ़ी हो गया", दानकिची ने हुक्म दिया, "हमें जो चाहिए वह है विचार, हिंसा नहीं। हम अपने नौजवान साथियों को बोलने की इजाज़त देंगे। ठीक है, गोन्ता। अपनी बात को यहाँ सबके सामने खुलकर कहो।"

"बात यूँ है कि हम सबके भूख से मर जाने के बदले, ऊँह, देखिये न ... ताकि चुनिन्दा जवान और ताक़तवर सदस्य जो क़बीले के लिए ज़्यादा ज़रूरी हैं—उनके एक दिन भी ज्यादा ज़िन्दा रहने के लिए हमें कमज़ोरों को छोड़ देना होगा ..."

"बेवकूफ़ नौजवान, मेरा ख़याल है बोलने की इजाज़त दिये जाने पर तुम्हें इस तरह की बातें कहते हुए कुछ विशेष मज़ा आ रहा होगा।" गुस्से से भिंची मुट्ठी को हिलाते हुए एक बुजुर्ग चिल्लाया।

दानकिची ने एक बार फिर तेज़-मिज़ाज बन्दरों को शान्त किया और कहा, "तो क्या तुम यह कह रहे हो कि अगर हम भोजन ढूँढ़ भी लें तो भी हम उसे कमज़ोर बन्दरों को न दें और उन्हें अपनी आँखों के सामने मर जाने दें ?"

"ऊँह ..., ख़ैर ..."

"यह मारुति पर्वत के क़ानून के ख़िलाफ़ है। यह ग़ैरक़ानूनी है !" एक और बुज़ुर्ग ने फटी हुई आवाज़ में कहा।

एक बार फिर विरोध की चिल्ल-पों को चुप कराने के लिए दानकिची को बोलना पड़ा, "यह वक़्त क़ानून और नियमों पर बहस करने का नहीं है। अगर हमें कमज़ोरों को निगल भी जाना पड़े तो यह भी मंजूर है लेकिन ताक़तवर और बेहतर बन्दरों को ज़िन्दा रखना आवश्यक है, नहीं तो मारुति पर्वत की नस्ल का अन्त हमारे वंश के साथ ही हो जायेगा।"

"यह वंश वगैरह की बात क्या है ? इसे क्यों हर क़ीमत पर बनाये रखना चाहिये ? हाँ, ये लौंडे-लपाड़े जो कह रहे हैं वह यह है कि उन्हें ज़िन्दा रहना चाहिए, दूसरे रहें या न रहें, हुँह !"

गुफा में गड़बड़ी का माहौल बनने लगा। भूख और निराशा से भरी आँखें दूसरी

आँखों पर लगी थीं और बन्दर उस झगड़े का इन्तज़ार कर रहे थे, जिसमें फ़ैसला ताक़तवरों के हक़ में होना था।

दानकिची आँखें आधी बन्द किये गुफा के बाहर देख रहा था और खुद बड़बड़ा रहा था, "अगर झगड़ा शुरू हो गया तो कमज़ोर मारे जायेंगे और उनका मांस सुखा दिया जायेगा। यह तो 'बन्दर का सूखा मांस' जैसी पुरानी कहावत ही होगी। एक बार इन भूखे बन्दरों के मुँह इस मांस का स्वाद लग गया तो वे इस स्वाद को कभी नहीं भूलेंगे। साथ ही खाये गये बन्दरों के परिवार दूसरों के प्रति हमेशा के लिए द्वेष-भाव सँजोये रखेंगे और झगड़ा कभी ख़त्म नहीं होगा। और यह मारा-मारी तब तक जारी रहेगी जब तक कि एक भी बन्दर न बचे और वही अन्त होगा हमारे क़बीले का। आह, मैं मारुति पर्वत और अपने क़बीले को इस प्रकार समाप्त होता नहीं देख सकता। इसे देखने से तो मैं मर जाना ज्यादा पसन्द करूँगा।"

बर्फ़ गिरती रही, ... तेज़ और तेज़, उस पर्वत को ढकती हुई, जिस पर दानकिची ने काफ़ी लम्बे समय तक राज्य किया था।

"ज़हरीली, हँसीवाली खुम्बियाँ ! हाँ, वही करूँगा। मैं उस पेड़ की खोह में छिपाकर रखी हुई उन खुम्बियों को ले आऊँगा ताकि हर कोई इन्हें भरपेट खाकर हँसते-हँसते मर सके। उनके द्वारा एक-दूसरे को क़त्ल कर देने से तो यह बेहतर है।"

जब वह यह सोच रहा था तो उन सात बच्चों की तस्वीरें, जो नीले पड़ गये और फूल गये चेहरों के साथ मर गये थे, उसकी आँखों के सामने उभर आयीं।

"ओह, यह नहीं चलेगा। बिल्कुल नहीं। सभी को मार देना, भोले-भाले शिशु बन्दरों तक को भी। यह तो बहुत ही बुरा होगा। मैं यह नहीं कर पाऊँगा। हम कोई इन्सानों की तरह नहीं हैं।"

बेचारे दानकिची को इतना दुख हुआ कि उसके गले से दर्द की एक चीख़ निकल गयी।

"क्यों नहीं आता वसन्त इस वर्ष !!"

गुफा के अन्दर सब कुछ निस्तब्ध एवं शान्त था।

"माँ, कहाँ से आता है वसन्त ?" गुफा के पिछले हिस्से में माँ की छाती से चिपके एक नन्हें बन्दर की तोतली आवाज़ फूटी।

गुफा के अन्दर का तनावपूर्ण वातावरण एकाएक शिथिल पड़ गया और सभी बन्दर चटर-पटर करने लगे।

"वसन्त आता है एक ऐसी जगह से, जो यहाँ से दूर, बहुत दूर है" ... छोटे बन्दर की माँ ने जवाब दिया।

"बहुत दूरवाली जगह कहाँ है ?"

"वह बर्फ़ से ढके सफ़ेद पहाड़ के दूसरी तरफ़ है। पहाड़ के दूसरी ओर वसन्त ज़रूर पहुँच चुका है। वहाँ बर्फ़ पिघल चुकी है और हो सकता है फूल भी खिल चुके हों।"

दानकिची को अपने अन्दर एक गर्माहट-सी महसूस हुई। "आह, हालात चाहे जितने भी ख़राब हों, इन छोटे-छोटे बन्दरों में ज़िन्दा रहने की भावना कितनी प्रबल है ? मैं कभी भी उनकी जान नहीं ले सकता, जो हर मुसीबत में ज़िन्दा रहने की कोशिश करते हैं। उन्हें ज़िन्दा ही रहने दिया जाना चाहिये। उन्हें ज़िन्दा ही रहना ..."

"वसन्त इस साल किसी-न-किसी वक़्त तो आयेगा ही न ? लेकिन माँ मैं अब और इन्तज़ार नहीं कर सकता। अगर वसन्त हमारे पास नहीं आता तो चलो हम सब मिलकर उसे ढूँढ़ें।"

"यह छुटकू कैसी पागलपन की बातें करता है !" एक बुज़ुर्ग ने झुँझला कर कहा—"मैंने जाकर वसन्त को ढूँढ़ने की बात कभी नहीं सुनी। पुराने ज़माने से ही हमने मारुति पर्वत पर ही वसन्त का इन्तज़ार किया है और वह अवश्य आता है। समझे बेटे ! हम तो सिर्फ़ इन्तज़ार ही कर सकते हैं।"

"क्यों ? अगर वसन्त हमारे पास नहीं आता तो हमें उससे मिलने जाना चाहिए। मैं जा रहा हूँ। मैं वसन्त की अगुवाई करने पहाड़ के नीचे जाऊँगा।"

"इस पहाड़ से नीचे जाओगे", दानकिची आश्चर्य से उछल पड़ा। "अगर हम मारुति पर्वत छोड़ दें तो हमारा सब कुछ छिन नहीं जायेगा ? क्या मैं इतना सुन्दर पहाड़ गँवा दूँ जहाँ मैंने इतने समय तक राज किया है ! कभी नहीं।"

फिर दानकिची की नज़रों के ठीक सामने, जिस छोटे-से बन्दर ने यह सब कहा था, वह अपनी माँ की बाँहों से निकलकर गुफा के फ़र्श पर कूदता हुआ गुफा के द्वार की ओर चल पड़ा। उसकी देखा-देखी दूसरे छोटे बन्दर भी उसके पीछे हो लिये। वे बाहर भागकर उस दूसरे वाले पहाड़ की ओर चलने लगे, जिसकी ओर बन्दर की माँ ने इशारा किया था। उनके छोटे-छोटे पाँव पहाड़ को ढकनेवाली बर्फ़ में धँसे जा रहे थे। उनके ठीक पीछे उनकी माताएँ उन्हें पकड़ने के लिए दौड़ रही थीं।

दानकिची भावशून्य चेहरे से यह सब देखता रहा और फिर एकाएक गोल-गोल घूमा और गुफा में उपस्थित सभी बन्दरों से चिल्लाकर बोला, "ठीक है, चलो, हम सब,

पहाड़ से नीचे चलें। हम वसन्त से मिलने जायेंगे। सबसे पहले हमें वह अगला पहाड़ पार करना होगा।"

जल्दी ही सभी बन्दर गुफा के पीछे खड़े थे, उसके बाद थे क़बीले के नेता और यहाँ तक कि बड़े-बुज़ुर्ग भी उस समूह में शामिल हो गये थे।

जैसे ही उसने निश्चित कर लिया कि आख़िरी बन्दर भी गुफा से बाहर निकल गया था, दानकिची क़बीले के सामने से भागता हुआ आकर समूह के आगे अपने स्थान पर पहुँच गया और गहरी बर्फ़ को तेज़ी से खोदता हुआ अपना रास्ता बनाने लगा।

दानकिची और उसके क़बीले के बन्दर घाटी में से गुज़रे। फिर एक जमी हुई नदी पार की और तुषार-भरे एक जंगल में चलते रहे।

जल्दी ही बन्दरों की क़तार फैलने लगी, लेकिन तब ताक़तवर युवा बन्दरों ने थकी माताओं की बाँहों से शिशु बन्दरों को ले लिया और उन्हें अपनी पीठ पर ले चले तथा डगमगाते बूढ़े बन्दरों के हाथ पकड़कर उन्हें चलने में मदद करने लगे।

तब भी अन्दाज़ नहीं लगाया जा सकता कि क़बीले को रास्ते में किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और थकान से चूर होकर कितने बन्दर बर्फ़ में ढेर हो गये। लेकिन फिर भी काफ़िला बिना रुके चलता ही रहा, बिना एक बार भी पीछे देखे, आगे-हो-आगे, वसन्त की ओर, नवजीवन की ओर ...

इस सबमें कितना वक़्त लगा ? कुछ को लगा कि यह सिलसिला चलता ही रहेगा; कुछ के लिए समय का अर्थ ही नहीं रह गया था।

तभी अचानक, एक दिन, एक शिशु बन्दर खुशी से चिहुँक उठा, "लो देखो, मैं उस सामनेवाले पहाड़ पर एक साफ़ जगह देख सकता हूँ—लगता है वहाँ बर्फ़ नहीं है। और, ओह, हवा में कैसी ख़ुशबू तिरती आ रही है !"

यह सुनते ही दानकिची को एकाएक लगा कि उसका शरीर निढाल-सा हो गया है – "आहा, यह तो ज़रूर वसन्त की बयार है।"

अपने गाल पर कोमल, मृदु बयार का अनुभव करते हुए दानकिची ने, जिसने गहरी बर्फ़ को काटकर राह बनाते हुए दिन-रात अपने क़बीले की अगुवाई की थी, महसूस किया कि उसकी ताक़त जवाब दे रही है, उसके घुटने झुकने लगे और वह बर्फ़ पर गिर पड़ा।

"यही वसन्त है ! वसन्त है !"

"अरे, हम वसन्त तक आ पहुँचे हैं !"

छोटे बन्दरों की आवाज़ें ख़ुशी से गूँजने लगीं और बाक़ी बन्दर गिरते-पड़ते दानकिची की पीठ के ऊपर से कूदकर भागे। युवा और बूढ़े सभी बन्दर अपने नेता के ऊपर से कूदकर भागे, जहाँ तक उनकी थकी हुई टाँगें उन्हें ले जा सकती थीं।

बर्फ़ में अकेले रह जाने पर भी दानकिची ने ख़ुशी से किलकारी भरी। छोटे-छोटे बन्दरों की ख़ुशियों से भरी आवाज़ें सुनकर उसने कल्पना की फूलों से भरी वसन्त ऋतु की क्यारियों की—जिनमें छोटे-छोटे बन्दर कूदते-फाँदते फिर रहे थे।

"जिओ, ताक़तवर और स्वस्थ छोटे बन्दरो ..." धीरे-से ये शब्द बुदबुदाते हुए वहीं दानकिची ने आख़िरी साँस ली और हमेशा के लिए चुप हो गया।

अगर वसन्त हम तक नहीं आता तो हमें ही उसके पास जाना चाहिए।

11.5.9.89
17.11.04

I. I. A. S. LIBRARY

Acc. No.

This book was issued from the library on the date last stamped. It is due back within one month of its date of issue, if not recalled earlier.

CP&SHPS—519-I.I.A.S./2004-25-6-2004-20000.

वर्तमान युग के अविवेकपूर्ण विकास की पहचान हो चली है—परस्पर अविश्वास, स्वार्थ, लालच और टकराव। अपनी संवेदना और सहानुभूति के बावजूद पुरानी और पिछली पीढ़ी अपनी ग़लतियों को दोहराती रही है। इसी पृष्ठभूमि में लिखित **ताजिमा शिन्जी** की इस पुस्तक में संकलित पाँचों कहानियाँ मानवीय अस्तित्व और आदर्श के विभिन्न पहलुओं को चित्रित करती हैं। हमें यह सन्देश भी देती हैं कि मानवीय जीवन का उत्कर्ष केवल भौतिक सफलता प्राप्त करना नहीं। कोई भी चाह या ललक, जिसे प्यार से सन्तुलित न किया जाय, आत्मा की हत्या कर देती है। मानव-जीवन को सुन्दर बनानेवाली जीवन की समग्रता पर ध्यान दिये बिना सपनों को साकार करने का प्रयत्न हम सबका सर्वनाश कर सकता है।

आज, जबकि असहिष्णुता, अतिक्रमण, हिंसा और युद्ध हमें उन मानवीय आदर्शों और गुणों से विचलित कर रहे हैं—जो हमारे जीवन को सुन्दर तथा योग्य बनाते रहे हैं, ये कहानियाँ बताती हैं कि हमें अपने जीवन को सुन्दर बनाने में आनेवाली रुकावटों पर विजय प्राप्त करनी होगी और संघर्ष के साथ अपना वचन निभाने की पूरी तैयारी करनी होगी।

यह पुस्तक समर्पित है उन बच्चों और बड़ों को—जो अविश्वास एवं कठिनाइयों के बावजूद इक्कीसवीं शताब्दी के प्रति आशा एवं दृढ़ता से उन्मुख हैं।

ISBN : 81-260-0224-7

Library IIAS, Shimla
H 028.5 Sh 63 A
00115989

चालीस रुपये